Biyani's Think Tank

Concept based notes

Hindi Teaching

(B.Ed.)

Ms. Sarita Pareek
Dr. Kusum Lata
Deptt. of Education
Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur

Published by :

Think Tanks

Biyani Group of Colleges

Concept & Copyright :

©Biyani Shikshan Samiti

Sector-3, Vidhyadhar Nagar,

Jaipur-302 023 (Rajasthan)

Ph : 0141-2338371, 2338591-95 • Fax : 0141-2338007

E-mail : acad@biyanicolleges.org

Website :www.gurukpo.com; www.biyanicolleges.org

Edition: 2009

Price:

While every effort is taken to avoid errors or omissions in this Publication, any mistake or omission that may have crept in is not intentional. It may be taken note of that neither the publisher nor the author will be responsible for any damage or loss of any kind arising to anyone in any manner on account of such errors and omissions.

Leaser Type Setted by :

Biyani College Printing Department

Preface

I am glad to present this book, especially designed to serve the needs of the students. The book has been written keeping in mind the general weakness in understanding the fundamental concepts of the topics. The book is self-explanatory and adopts the "Teach Yourself" style. It is based on question-answer pattern. The language of book is quite easy and understandable based on scientific approach.

Any further improvement in the contents of the book by making corrections, omission and inclusion is keen to be achieved based on suggestions from the readers for which the author shall be obliged.

I acknowledge special thanks to Mr. Rajeev Biyani, *Chairman* & Dr. Sanjay Biyani, *Director* (*Acad.*) Biyani Group of Colleges, who are the backbones and main concept provider and also have been constant source of motivation throughout this Endeavour. They played an active role in coordinating the various stages of this Endeavour and spearheaded the publishing work.

I look forward to receiving valuable suggestions from professors of various educational institutions, other faculty members and students for improvement of the quality of the book. The reader may feel free to send in their comments and suggestions to the under mentioned address.

Author

इकाई-1

प्रश्न 1.''भाषा विचाराभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। भाषा के आविर्भाव से सारा मानव संसार गूंगों की विराट् बस्ती बनने से बच गया है।'' यह कथन है—

(अ) सीताराम चतुर्वेदी (ब) डॉ. भोलानाथ तिवारी

(स) रामचन्द्र वर्मा (द) बर्नार्ड ब्लॉक एवं जार्ज ट्रेगर (अ)

प्रश्न 2. भाषा के प्रमुख अवयव है—

(अ) दो (ब) चार

(स) आठ (द) दस (ब)

प्रश्न 1. मातृभाषा शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– 1. ज्ञानात्मक उद्देश्य—भाषा सम्बन्धी निम्नलिखित जानकारियाँ देना, ध्वनि, वर्ण, शब्द, पद, पदबन्ध, वाक्य, आशय, भाव, बोध।

2. पत्र, कहानी, निबन्ध, आत्मकथा आदि रूपों की जानकारी देना।

3. औपचारिक व्याकरण का ज्ञान देना और व्यावहारिक व्याकरण के तत्त्वों से बालकों को परिचित कराना।

2. अर्थ-ग्रहण का उद्देश्य—अर्थ-ग्रहण का अर्थ है उच्चारित एवं लिखित भाषा के भाव को पूरी तरह से समझने की शक्ति। इस उद्देश्य के दो पक्ष हैं—

(1) अन्य पुरुषों द्वारा बोली हुई स्वभाषा में श्रुत सामग्री को समझने का पूर्ण विकास।

(2) हिन्दी के लेखकों द्वारा लिखी हुई भाषा को पूरी तरह से समझने की शक्ति का विकास।

3.अभिव्यक्ति का उद्देश्य—अभिव्यक्ति का अर्थ है अपने द्वारा श्रुत अथवा पठित सामग्री अथवा किसी के द्वारा लिखित सामग्री के भावों तथ्यों, विचारों को अपनी भाषा में प्रकट करना। अपने विचारों, भावों और स्वानुभूतियों को प्रकट करना भी क्रिया में समाविष्ट कार्य है, किन्तु उस क्षमता का विकास शिक्षा के उच्चतर स्तरों पर ही अधिक किया गया है। अभिव्यक्ति मौखिक और लिखित दो प्रकार से होती है।

4. अभिरुचि का उद्देश्य—अभिरुचि का अर्थ है—विशेष रुचि। अतः भाषा और साहित्य में विशेष रुचि का अर्थ है, छात्रों में पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों के पढ़ने में विशेष दिलचस्पी पैदा करना, अच्छी-अच्छी कविताएँ कण्ठस्थ करना, कक्षा और विद्यालय की पत्रिका में योगदान देना। विद्यालय में होने वाली साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेना, साहित्यकारों, कवियों के चित्र इकट्ठे करना आदि रुचियों को भाषायी और साहित्यिक रुचियाँ माना जाता है।

5. अभिवृत्ति का उद्देश्य—भाषा शिक्षण का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है छात्रों में सद्वृत्तियों का विकास। मुख्य सद्वृत्तियाँ हैं—आस्था, श्रद्धा, साहित्य प्रेम, मानव प्रेम, सहृदयता, संवेदनशीलता। भाषा शिक्षण द्वारा शिक्षक चाहता है कि उसके छात्र अपने देश की संस्कृति में आस्था रखें। भारतीय आदर्शों के प्रति श्रद्धावान हों,

सामाजिक मान्यताओं में आस्था रखकर उनका पालन करें, देश-प्रेम और मानव-प्रेम की ओर अग्रसर हों, अपने पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हों।

प्रश्न 2. भाषा में शुद्ध उच्चारण का क्या महत्त्व है ? अक्षरों में शुद्ध उच्चारण के क्या नियम है ?

उत्तर– शुद्ध आक्षरिक उच्चारण ही भाषा विशेष के ज्ञान का प्रथम चरण है। मौखिक भाषा में उच्चारण का विशेष महत्त्व होता है, क्योंकि उच्चारण की अशुद्धि से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। वर्णों के उच्चारण में दाँत, ओष्ठ और व्यक्ति के स्वभाव का विशेष हाथ रहता है।

आक्षरिक उच्चारण के नियम :

1. कौनसा अक्षर किस स्थान से उच्चारित होता है, इसका ज्ञान छात्र को देना चाहिए। शिक्षक को उस अक्षर का स्वयं उच्चारण कर छात्रों से शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना चाहिए।
2. ष को हिन्दी में श की तरह बोला जाता है, ख के रूप में नहीं जैसे—वर्षा।
3. ज्ञ को ग्य् रूप में बोला जाता है, ज्ञ के रूप में नहीं, जैसे—ज्ञान।
4. क्ष को क्छ अथवा क्ष के रूप में बोला जाता है, जैसे—ऋतु।
5. ऋ को रि के रूप में बोला जाता है, जैसे—ऋतु।
6. ञ् तत्सम शब्दों में संयुक्त अक्षर बनाने के काम आता है और उच्चारण अब न् के समान होता है, जैसे—चंचल, अंजन आदि।
7. ण का उच्चारण स्वर सहित होने पर ठीक ण की तरह होता है, किन्तु स्वर रति होने पर उसका उच्चारण न् के समान होता है, जैसे—पण्डित्, ठण्डा आदि।
8. दीर्घ स्वरों के साथ अनुस्वार का उच्चारण प्राय: चन्द्र बिन्दु (ँ) अथवा अर्थ अनुस्वार की तरह होता है, जैसे—हैं, मैं, नहीं आदि।
9. अकारान्त शब्दों के अन्तिम व्यंजन का उच्चारण प्राय: हलन्त से किया जाता है, किन्तु लिखा सस्वर जाता है, जैसे—प्यार, राम, दिन, रात।
10. द्य का उच्चारण द्य के रूप में होता है, जैसे—विद्यार्थी।

इकाई-2

प्रश्न 1.भाषा सीखने का स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक क्रम है—

(अ) पढ़ना—लिखना, सुनना—बोलना (ब) सुनना—बोलना, बोलना—पढ़ना

(स) सुनना—बोलना, पढ़ना—लिखना (द) सुनना—बोलना, लिखना—पढ़ना (स)

प्रश्न 2. सामान्य विचार का उदाहरण है—

(अ) आवाज (ब) धुआँ

(स) मोटरकार (द) पानी (स)

प्रश्न 1. भाषा विकास के कितने अंग होते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– भाषा विकास के निम्नलिखित पाँच अंग होते हैं–

(1) शब्द भण्डार–बच्चे की शब्दावली उसकी उम्र के अनुपात में बढ़ती है। कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो वह समझ लेता है और बोल लेता है किन्तु कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो वह समझ तो लेता है, किन्तु बोल नहीं पाता है। बालक की शब्द सामर्थ्य की शक्ति में वृद्धि उम्र के अनुसार होती है।

(2) अभिव्यक्ति–बालक 6 वर्ष तक अपने भावों को सही रूप से अभिव्यक्त नहीं कर पाते किन्तु 6 वर्ष बाद धीरे-धीरे उसकी अभिव्यक्ति स्पष्ट होने लगती है।

(3) वाचन–बालक 6 वर्ष का होने पर वाचन की शिक्षा प्रारम्भ करता है। 9 वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते वह अक्षरों के आकार की अपने मस्तिष्क में रूपरेखा तैयार कर बोलता है।

(4) लिपि–6 वर्ष का होने पर बालक का स्नायुमण्डल सुदृढ़ हो जाता है और वह धोरे-धीरे लिखने में सक्षम हो जाता है।

(5) वाक्य बनाना–प्रारम्भ में बालक एक या दो शब्दों वाले वाक्य बोलते हा। धीरे-धीरे वह 4-5 शब्दों वाले वाक्य बोलने लगता है। बालक की छोटी अवस्था में भाषा सीखने में उसका दृश्य बिम्ब सहायक होता है। इस समय दृष्टि बिम्ब और सहायक होता है। इस समय दृष्टि बिम्ब और श्रति बिम्ब के एकीकरण से चिन्तन प्रक्रिया का निर्माण होता है।

इकाई-3

प्रश्न 1.मातृभाषा से अन्य भाषा को सीखने के लिए किस कौशल की आवश्यकता पड़ती है ?

(अ) लेखन-कौशल (ब) वाचन-कौशल

(स) श्रवण-कौशल (द) भाषण-कौशल (स)

प्रश्न 2. पत्र-लेखन में बराबर वालों के लिए किस शब्द का प्रयोग किया जाता है ?

(अ) चिरंजीव (ब) मान्यवर

(स) श्रद्धेय (द) प्रियवर (द)

प्रश्न 1. श्रवण कौशल से आप क्या समझते हैं ? श्रवण कौशल की उपयोगिता एवं महत्त्व का वर्णन करिये।

उत्तर– श्रवण कौशल—बालक प्रथमावस्था में श्रवण का ही आश्रय लेता है। सुनी हुई बातों का हमारे मन-मस्तिष्क पर विशेष प्रभाव पड़ता है और वाणी में उसका असर साफ दिखाई देता है। जैसी बोली बालक परिवार में सुनता है, उसी का तदनुरूप अनुकरण करना प्रारम्भ कर देता है। फेफड़ों से निकली हुई वायु ध्वनि यन्त्र के अंगों के आन्दोलन के फलस्वरूप बाह्य रूप से निष्कासित होती है। इस प्रकार वह एक विशेष प्रकार के कम्पन से लहरें पैदा कर देती हैं। इस कम्पन का प्रभाव मध्यवर्ती कान की अस्थियों द्वारा भीतरी कान के द्रव्य पदार्थ पर पड़ता है और उसमें भी लहरें उठती हैं, जिसकी सूचना श्रवणी शिरा के तन्तुओं द्वारा मस्तिष्क में जाती है और हम सुन पाने में सक्षम होते हैं।**श्रवण कौशल का महत्त्व–**

1. श्रवण में कुशलता होने पर अन्य व्यक्ति के विचारों को शीघ्रता व सरलता से ग्रहण किया जा सकता है।
2. श्रवण कौशल से वक्ता की कठिनाई दूर होती है क्योंकि श्रोता यदि कुशल नहीं है तो वक्ता को समझाने के लिए बार-बार आवृत्ति करनी पड़ती है।

श्रवण कौशल के विकास की उपयोगिता– बालक पहले सुनता है फिर बोलने का प्रयास करता है। दूसरे के उच्चारण को सुनकर वैसे ही बोलना चाहता है। अतः बालक को भाषा के विकास के लिए श्रवण में कुशलता अर्जित करनी चाहिए। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि सर्वप्रथम बालक में श्रवण कौशल का विकास करे।

प्रश्न 2. श्रुतलिपि क्या है ? श्रुतलिपि की विधियों का वर्णन करो।

उत्तर– श्रुतलिपि में अध्यापक बोलता जाता है और बालक सुनकर लिखते जाते हैं। कहीं-कहीं पर श्रुतलेख के लिए सीतावाद्य (ग्रामोफोन) या ध्वनि-लेख यन्त्र (टेप-रिकॉर्डर) का भी प्रयोग होता है। सुनकर लिखे जाने के कारण इसे श्रुतलेख कहा जाता है। श्रुतलिपि की सफलता निम्नलिखित बातों पर निर्भर करती हैं—

1. विषय-सामग्री, बालकों की रुचि, अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर चुनी जाये।
2. बालकों के पास उचित लेखन-सामग्री हो।

3. छात्र ठीक आसनपर बैठाए जाएँ।

4. अध्यापक का उच्चारण स्पष्ट हो।

5. अध्यापक की बोलने की गति ठीक हो।

6. अध्यापक जो गद्यांश चुने, वह न तो बहुत सरल हो और न बहुत कठिन। प्रारम्भ में छात्रों को पाठ्य-पुस्तक का ही कोई अंश चुनना चाहिए। बाद में पत्र-पत्रिका का कोई गद्यांश चुना जा सकता है।

श्रुतलिपि की विधि :

1. प्रथम सोपान—गद्यांश के नवीन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए। जब सभी बालक इन शब्दों को अच्छी प्रकार से देख लें, तब उन्हें मिटा दिया जाए।

2. द्वितीय सोपान—अध्यापक गद्यांश का सस्वर वाचन करे। बालक केवल सुनें और केन्द्रीयभाव को समझ कर लिखने के लिए तैयार हो जायें।

3. तृतीय सोपान—अध्यापक अपेक्षाकृत तीव्र गति से गद्यांश का वाचन करे, ताकि छात्र छूटे हुए और अशुद्ध शब्दों को ठीक कर सकें।

4. श्रुतलिपि का संशोधन :

1. यदि बालकों की संख्या कम हो, तो अध्यापक व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक बालक को सामने बुलाकर संशोधन करें।

2. बालकों की संख्या अधिक होने पर अध्यापक छात्रों की अभ्यास पुस्तिकाएँ अपने घर ले जाकर संशोधित करें, यदि इस कार्य में विलम्ब हुआ तो संशोधन का पूरा-पूरा लाभ छात्रों को नहीं मिल पाएगा।

3. यदि गद्यांश पाठ्य-पुस्तक में लिखा गया है, तो छात्र को स्वयं अपने कार्य को संशोधित करने के लिए कहा जा सकता है।

4. पत्र-पत्रिका से लिया हुआ गद्यांश श्यामपट्ट पर लिखा जा सकता है और छात्र उसे देखकर अपनी अशुद्धियाँ सुधार सकते हैं।

5. बालकों ने जो शब्द अशुद्ध लिखे हैं, उनका शुद्ध स्वरूप उनसे पाँच-पाँच बार लिखवाया जाए, ताकि वह उनके मन में स्थिर हो सके।

प्रश्न 3. हिन्दी शिक्षण के ज्ञानात्मक उद्देश्य कौन-कौनसे हैं ? व्यवहारगत परिवर्तन सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— ज्ञानात्मक उद्देश्य—ज्ञानात्मक उद्देश्यों का तात्पर्य है, छात्रों को भाषा एवं साहित्य की कुछ बातों का ज्ञान देना। प्राय: निम्नलिखित बातों की जानकारी देना ज्ञानात्मक उद्देश्य के अन्तर्गत है—

1. ध्वनि, शब्द एवं वाक्य-रचना का ज्ञान देना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्य-गीत, गद्य-गीत आदि साहित्यिक विधाओं का ज्ञान देना।

3. सांस्कृतिक, पौराणिक, व्यावहारिक एवं जीवनगत अनुभूतियों, गाथाओं, तथ्यों, घटनाओं आदि का ज्ञान देना तथा लेखक की जीवनगत, रचनागत विशेषताओं एवं समीक्षा सिद्धान्तों का उच्च माध्यमिक स्तर पर ज्ञान देना।

4. रचना-कार्य के मौखिक एवं लिखित रूपों का ज्ञान देना, जिनमें वार्तालाप, सस्वर वाचन, अन्त्याक्षरी, भाषण, वाद-विवाद, संवाद, साक्षात्कार, निबन्ध, सारांशीकरण, कहानी, आत्मकथा, पत्र, तार आदि सम्मिलित हैं।

5. उच्चतर-माध्यमिक स्तर पर छात्रों को हिन्दी-साहित्य के इतिहास की रूपरेखा से भी परिचित कराना चाहिए।

ज्ञानात्मक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्र के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन निम्नलिखित होंगे—

1. छात्र इन्हें पहचान सकेगा।

2. वह इनका प्रत्यभिज्ञान कर सकेगा।

3. वह इनके अशुद्ध रूपों में त्रुटियाँ पकड़ सकेगा।

4. वह इनके उदाहरण दे सकेगा।

5. वह इनकी तुलना कर सकेगा।

6. वह इनमें परस्पर अन्तर कर सकेगा।

7. वह उनका परस्पर सम्बन्ध बता सकेगा।

8. वह इनका विश्लेषण कर सकेगा।

9. वह इनका वर्गीकरण कर सकेगा।

इकाई-4

प्रश्न 1.शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया किस विद्वान ने बताया ?

(अ) कनिंघम (ब) हार्न

(स) जान डी.वी. (द) इनमें से कोई नहीं (स)

प्रश्न 2. पाठ्यक्रम का उद्देश्य है—

(अ) संवेगात्मक विकास करना (ब) मानसिक विकास करना

(स) सर्वांगीण विकास करना (द) शारीरिक विकास करना (स)

प्रश्न 3. 'अल्पप्राण' व्यंजन का उदाहरण है—

(अ) ख, ग (ब) क, ख

(स) ख, घ (द) ख, ङ (स)

प्रश्न 1. पाठ्यक्रम से आप क्या समझते हैं ? इसके महत्त्व एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– पाठ्यक्रम का अर्थ–पाठ्यक्रम (Curriculum) शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द 'Current' से मानी जाती है। जिसका अर्थ भागना अथवा दौड़ना है। इसके अनुसार ''गन्तव्य स्थान तक पहुँचने तक की प्रक्रिया का विषय ज्ञान ही पाठ्यक्रम है।'' **पाठ्यक्रम का संकुचित अर्थ** (Narrower Meaning)— पाठ्यक्रम का संकुचित अर्थ 'पाठ्यक्रम का दिशा-निर्देश पत्र है। जिसमें निश्चित विषयों की निश्चित सीमा प्रकरणों में विभक्त रहती है और परीक्षाओं के लिए इन इकाइयों को पढ़ना पड़ता है। परन्तु जीवन में काम आने वाली व्यावहारिक वस्तुओं—रुचियों, क्षमताओं एवं आदतों को स्थान नहीं दिया जाता। इस प्रकार पाठ्यक्रम केवल मूल्याँकन के लिए या प्रमाण-पत्र लने के लिए एक पुस्तकीय ज्ञान के सदृश्य है।

पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ–

1. **डीवी** के अनुसार, ''सीखने का विषय या पाठ्यक्रम पदार्थों, विचारों और सिद्धान्तों का चित्रण है जो कि उद्देश्यपूर्ण लगातार क्रियान्वेषण के साधन या बाधा के रूप में आ जाते हैं।''
2. **कनिंघम** के अनुसार, ''पाठ्यक्रम जिससे (कलाकार शिक्षक के हाथ में एक साधन है, जिससे वह अपने पदार्थ (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार अपने कलागृह (शिक्षालय) में चित्रित कर सके।''

पाठ्यक्रम के उद्देश्य–

1. यह बालकों में सर्वांगीण विकास करने का एक माध्यम है।
2. यह बालक की क्रियाओं एवं अनुभवों का एक संगठन है, अत: व्यावहारिक है।
3. यह एक ऐसे वातावरण का सृजन करता है जहाँ पर कि बालक तार्किक, अवलोकन, चिन्ता एवं निर्णय शक्ति का विकास करता है।

4. इसके अन्तर्गत बालक की योग्यताओं, क्षमताओं, अभिवृत्तियों, रुचियों तथा आवश्यकताओं को ध्यान मे रखा जाता है।
5. बालक के सामाजिक शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण कर उसे एक आदर्श नागरिक बनानेका कार्य करता है।
6. इसके द्वारा प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तियों का निर्माण होता है, जिसमें पर्याप्त ज्ञान एवं अन्वेषण क्षमता होती है।
7. यह शैक्षिक, सामाजिक, नैतिक शिक्षा के उद्देश्यों के साथ भावात्मक गुणों आदि का विकास करता है।

इकाई-5

प्रश्न 1.किस शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ है ?

(अ) शुद्धीकरण (ब) मनुष्यत्व

(स) प्रकुपित (द) सामाजिक (स)

प्रश्न 2. 'अधजल गगरी छलकत जाय' लोकोक्ति का अर्थ होगा—

(अ) कम शिक्षित व्यक्ति अधिक बोलते हैं।

(ब) ओछे व्यक्ति दिखावा अधिक करते हैं।

(स) आधी भरी गगरी अवश्य छलकतकी है।

(द) अधूरी योग्यता सब पर प्रकट होती है। (ब)

प्रश्न 1. विराम चिह्नों से आप क्या समझते हैं ? इसके विभिन्न प्रकारों का वर्णन करिये।

उत्तर– 'विराम-चिह्न' का तात्पर्य—'विराम चिह्न' का शाब्दिक अर्थ है—रुकने या ठहरने के सूचक चिह्न। लिखित भाषा में भावों या विचारों की अभिव्यक्ति की स्पष्टता हेतु विराम-चिह्नों का प्रयोग आवश्यक हो जाता है।

विराम-चिह्न की परिभाषा—मनुष्य के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति हेतु भाषा के अवयवों में परस्पर समानुपातिक सामंजस्य आवश्यक है। इस सामंजस्य की पूर्ति विराम-चिह्नों के द्वारा ही होती है।

विराम-चिह्न की परिभाषा निम्न प्रकार से है—''उस चिह्न या निशान को जिससे लिखते समय भाषा में रुकने या ठहरने का संकेत मिले, विराम-चिह्न कहते हैं।''

विराम-चिह्नों की उपयोगिता—भाषा के लिखने-बोलने में विराम-चिह्नों की आवश्यकता एवं उपयोगिता अनिवार्य है। वाक्यों की पूर्णता तथा अर्थ की स्पष्टता को सुरक्षित रखने के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग आवश्यक है। विराम-चिह्न भाषा में तीन प्रकार का काम करते हैं—

1. वाक्य में स्पष्टता—यदि वाक्य में विराम-चिह्नों का प्रयोग ठीक हो तो बात अच्छी तरह समझ में आती है, अन्यथा पाठक को अस्पष्टता एवं भ्रामकता बनी रहती है।

2. अर्थ में परिवर्तन—विराम-चिह्नों के प्रयोग से अर्थ में परिवर्तन भी हो जाता है। यदि इन विराम-चिह्नोंके स्थान बदल दिये जायें तो अर्थ परिवर्तन हो जाता है। यथा—

(अ) रिश्वत लेना पाप है। (अस्पष्ट वाक्य)

(आ) रिश्वत लेना, देना पाप है। (स्पष्ट वाक्य)

(इ) रिश्वत ले, ना देना पाप है। (अर्थ परिवर्तित वाक्य)

(ई) रिश्वत दे, ना लेना पाप है। (परिवर्तित वाक्य)

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले विराम-चिह्नों के नाम–

1.	अल्प विराम	,
2.	अर्द्ध विराम	;
3.	पूर्ण विराम	।
4.	योजक चिह्न	-
5.	निर्देशक चिह्न	—
6.	विवरण चिह्न	:—
7.	प्रश्नसूचक चिह्न	?
8.	विस्मयादिबोधक चिह्न	!
9.	उद्धरण चिह्न	‘ ’ व “ ”
10.	कोष्ठक चिह्न	( ) [ ] < >
11.	लोप चिह्न या अपूर्णता सूचक चिह्न	× × × .....
12.	संक्षेप चिह्न	०
13.	समानता चिह्न	=
14.	हंसपद चिह्न	γ
15.	रेखांकित चिह्न	– –
16.	निर्देशित चिह्न	→
17.	परिणति सूचक	>
18.	टीका सूचक	*
19.	पुनरुक्ति सूचक	”
20.	स्थान पूरक	.....
21.	समाप्ति सूचक	

इकाई-6

प्रश्न 1.वाचन शिक्षण की नवीन विधि नहीं है—

(अ) अक्षर बोधविधि (ब) शब्द विधि

(स) वाक्य विधि (द) कहानी विधि (अ)

प्रश्न 2. सस्वर वाचन का दोष नहीं है—

(अ) वाणी सम्बन्धी दोष (ब) क्षेत्रीय बोली सम्बन्धी दोष

(स) मनोवैज्ञानिक दोष (द) आवृत्ति-पुरावृत्ति दोष (द)

प्रश्न 1. अच्छे वाचन के क्या गुण होने चाहिए ?

उत्तर– 1. शुद्ध ध्वनियों का ज्ञान।

2. उच्चारण का शुद्ध अभ्यास।
3. सही शब्दों पर बलाघात—किस शब्द पर कितना जोर दिया जाना है, इस बात का ज्ञान आवश्यक है।
4. उचित विराम चिह्नों का प्रयोग।
5. भाषा में प्रवाह एवं गति पर पूर्ण ध्यान रखा जाय। न तो बहुत शीघ्रता से और न रुक-रुककर धीरे-धीरे पढ़ा जाये।
6. स्वर में रसात्मकता हो। कर्कशता से पढ़े शब्दों को श्रोता बिल्कुल पसन्द नहीं करता।
7. वाचन करते समय आनन्द की अनुभूति आवश्यक है। जब वक्ता ही रुचि नहीं लेगा तो श्रोता कैसे रुचि ले सकता है।
8. पढ़ते समय पुस्तक को भी उचित प्रकार से पढ़ना चाहिए।

प्रश्न 2.गद्य-पाठों में मौन पठन का अर्थ एवं उद्देश्य बताइये तथा मौन पठन पाठ्यपुस्तकों में कहाँ तक सहायक होता है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– मौन पठन का अर्थ—लिखित सामग्री को मन ही मन बिना आवाज निकाले पढ़ना मौन पठन या वाचन कहलाता है। भानुभूति व अर्थग्रहण इस पठन का उद्देश्य है। पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार-पत्र, धर्म-दर्शन इत्यादि में मौन पठन सहायक होता है तथा इसी के द्वारा वास्तविक आनन्द की प्राप्ति होती है।

मौन वाचन के उद्देश्य–

1. यह छात्रों को भाषा के लिखित रूप को समझाकर गहराई तक पहुँचाने में सहायता करता है।
2. यह छात्रों में चिन्तनशीलता का विकास करता है, जिससे उनकी कल्पना शक्ति विकसित होती है और छात्र बुद्धिमान बनता है।
3. मौन वाचन में व्यक्ति को थकान कम होती है।
4. मौन पठन में साथ के अन्य साथियों की कोई परेशानी नहीं होती है।
5. मौन वाचन छात्र को स्वाध्याय की ओर प्रेरित करता है।
6. छात्रों में तर्क-क्षमता का विकास होता है।

7. मौन वाचन का अभ्यास हो जाने पर छात्रों को गृहकार्य देने में सरलता हो जाती है।
8. मौन वाचन विद्यार्थी को अवबोध व संक्षेपीकरण की कला में दक्ष बनाता है।
9. मौन वाचन में मस्तिष्क पर कम जोर पड़ता है।
10. बालक पढ़ने के साथ विषय को भी आत्मसात कर लेते हैं।

प्रश्न 3. सस्वर वाचन और मौन वाचन में क्या अन्तर है ?

उत्तर– सस्वर वाचन

1. इस वाचन में छात्रों को अन्य छात्रों को अन्य छात्रों की गति से वाचन करना पड़ता है।
2. यह वाचन करने से छात्र की झिझक व संकोच की प्रवृत्ति दूर होती है तथा आत्मविश्वास बढ़ता है।
3. इस वाचन में उच्चारण, लय, गति तथा उतार-चढ़ाव पर ध्यान दिया जाता है।
4. यह वाचन प्राथमिक कक्षाओं के लिए अधिक उपयुक्त है।
5. यह वाचन वैयक्तिक तथा सामूहिक दोनों ही प्रकार से हो सकता है।
6. इस वाचन में छात्रों को थकान शीघ्र होने लगती है, क्योंकि इसमें वाक्-यन्त्रों पर अधिक जोर पड़ता है।
7. इस वाचन में उच्चारण व वाचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ आसानी से जाँची जा सकती है।

मौन वाचन

1. इस वाचन में छात्रों को अपनी गति से ही वाचन करना पड़ता है।
2. इस वाचन में झिझक का कोई अवसर नहीं होता।
3. इस वाचन में भाषा, व्याकरण, प्रसंग साहित्य की विधाओं, शैली, चरित्र, भाव आदि पर ध्यान दिया जाता हा।
4. यह वाचन माध्यमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त है।
5. इस वाचन को दोनों प्रकार से किया जा सकता है।
6. इस वाचन में थकान शीघ्र नहीं होती क्योंकि इसमें वाक्-यन्त्रों का उपयोग नहीं होता।
7. इस वाचन में इन अशुद्धियों को नहीं जाँचा जा सकता।

इकाई-7

प्रश्न 1.ज्ञान को अर्जन करने का प्रमुख साधन है—

(अ) सुनना (ब) बोलना

(स) स्वाध्याय (द) पहचानना (स)

प्रश्न 2. पठन क्रिया के विकास का सोपान नहीं है—

(अ) चित्र पठन (ब) शब्द पठन

(स) सृजनात्मक पठन (द) अर्थगत पठन (द)

प्रश्न 1. बालकों में पठन रूचि पैदा करने के उपाय लिखिए।

उत्तर– बालकों में पठन रुचि का विकास करने में हिन्दी शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। हिन्दी शिक्षक छात्रों को विभिन्न प्रकार के सत्साहित्य का अंश दिखाकर उनमें रुचि पैदाकर सकता है। पठन रुचि के विकास के उपाय निम्नलिखित हैं–

(1) बाल साहित्य की व्यवस्था करना–हिन्दी शिक्षक विद्यालय में बाल साहित्य एकत्रित करने की व्यवस्था करे ताकि बच्चे पठन में रुचि लें जिससे उनकी पठन की योग्यता विकसित हो। यह बाल साहित्य उनके स्तरानुसार होना चाहिए ताकि वे समझ सकें।

(2) उचित वातावरण–पाठन क्षमता वाचनालयों, विद्यालयों के कक्षा-कक्षों में उचित प्रकाश, शान्ति आदि पर निर्भर रहती है। इसलिए उत्तम वातावरण छात्रों के लिए आवश्यक होता है।

(3) छात्रों को स्तरानुसार पठन कराना–छात्रों में वाचन के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक छात्र की वाचन तत्परता का अध्ययन करके उसको पठन सामग्री उपलब्ध करायी जाये। बुद्धिमान छात्रों की वाचन तत्परता अधिक होती है, उन्हें कहानियाँ पढ़ने में रुचि होती है, उनको किसी प्रकार की मानसिक परेशानी नहीं होती।

(4) मौन वाचन कराना–कक्षा शिक्षण में मौन वाचन का अभ्यास कराना चाहिए। मौन वाचन से पठित सामग्री का मूलभाव आसानी से समझ में आ जाता है। मौन वाचन से एकाग्रता बढ़ती है। छात्रों की चयन शक्ति का विकास होता है।

(5) पुस्तकों की सूची बनवाना–बालकों द्वारा पढ़ी हुई पुस्तकों की सूची बनवाई जानी चाहिए। इस प्रकार के कार्य से बालकों में स्पर्द्धा की भावना पैदा होती है और वे अधिक पुस्तकें पढ़ने के लिए अभिप्रेरित होते हैं।

(6) बालकों की रुचि का ध्यान रखना–बालकों को उनकी रुचि के अनुकूल सामग्री प्रदान की जाये जो उनका ध्यान आकृष्ट कर सके, जिससे विषय में वे अपने दैनिक जीवन में पढ़ना और लिखना चाहते हो। सामग्री में वाक्यों की बनावट ऐसी हो जो प्रयोग में आती हो और कठिन न हो। **(7) माता-पिता का**

सहयोग लेना–पठन के प्रति रुचि विकसित करने के लिए छात्रों के माता–पिता का भी सहयोग लिया जाये। माता–पिता अपने बच्चों को उनकी रुचि का साहित्य खरीद कर देवें।

इकाई-8

प्रश्न 1. शिक्षण को आनन्ददायी बनाने के लिए इस क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों का उद्देश्य है—

(अ) शिक्षण में रुचि बनाये रखना (ब) ज्ञान प्रदान करना

(स) वाचन को बढ़ाना (द) स्पष्ट अभिव्यक्ति करना (अ)

प्रश्न 2. सहशैक्षिक क्रियाकलाप व आनन्ददायी शिक्षण में सक्रिय रहते हैं—

(अ) बालक (ब) शिक्षक(स) बालक व शिक्षक(द) इनमें से कोई नहीं (स)

प्रश्न 1. मौखिक अभिव्यक्ति को बढ़ाने हेतु आप शिक्षक के रूप में क्या-क्या प्रयास करेंगे ?

उत्तर– विद्यालय में विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया जायेगा जो उनकी मौखिक अभिव्यक्ति को बढ़ाने वाले होंगे।

(1) वार्तालाप–कक्षा या विद्यालय में बालकों को किसी बिन्दु पर बोलने के लिए कहा जायेगा। बालक अपने-अपने विचार प्रकट करेंगे।

(2) चित्र पठन–बालकों को कोई दृश्य दिखाकर उस पर प्रश्न पूछना बालक चित्र के आधार पर उत्तर देंगे।

(3) अधूरी कहानी पूरी करवाना–बालकों को कोई अधूरी कहानी सुनाकर उसको पूरी करवाने के लिए कहा जावे। बालक अपनी कल्पना शक्ति के अनुसार उस कहानी से सम्बन्धित वाक्य बोलेंगे।

(4) अन्त्याक्षरी–बालकों से शब्दों से सम्बन्धित अन्त्याक्षरी करवाई जाये। बालक नये-नये शब्द बोलेंगे।

(5) तुकबन्दी–बालकों को तुके के आधार पर शब्द निर्माण करने को कहा जाये। जैसे गर्म, शर्म।

(6) नवीन शब्द रचना करवाना–बालकों को कुछ वर्ष और शब्द देकर उनस नये शब्द बनाने के लिए कहा जाये। बालक इन शब्दों और वर्णों के योग से नये शब्द बना लेंगे।

(7) बालकों को कोई वस्तु दिखाकर उससे सम्बन्धित प्रश्न पूछना, बालक वस्तु के आधार पर प्रशें के उत्तर देंगे।

इकाई-9

प्रश्न 1.''किसी भाष्य को पढ़ने और लिखने की अपेक्षा, बोलना, सीखना सबसे छोटी पगडंडी को पार करना है।'' यह कथन है—

(अ) अरविन्द का (ब) माण्टेसरी का

(स) रायबर्न का (द) किटसन का (द)

प्रश्न 2. प्राथमिक कक्षाओं के लिए मौखिक अभिव्यक्ति की सबसे उपयुक्त विधि है—

(अ) कहानी कथन (ब) कविता पाठ

(स) अभिनय (द) चित्र वर्णन (द)

प्रश्न 1. प्राथमिक स्तर पर शिक्षण के उद्देश्यों का उल्लेख करिये।

उत्तर– प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. वाचन को शुद्ध, प्रवाहपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक बनाना हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य है।
2. कविता पाठ का वाचन छात्रों को सस्वर करना चाहिए। इससे उचित ताल एवं लय का भी उन्हें ज्ञान होता है।
3. छात्रों को इस प्रकार से तैयार करना चाहिए कि उनसे जो प्रश्न पूछा जाये, उसका उत्तर अपने शब्दों में दे सके।
4. छात्रों के शब्द-भण्डार में वृद्धि करना। बालकों में ऐसी क्षमता भी लाई जाये कि वे छोटे-छोटे वाक्य या वाक्यांश बना सके।
5. छात्रों को इस प्रकार क्षमताशील बनाना चाहिए कि वे मौनवाचन करके तथ्यों को याद कर सकें।
6. छात्रों के विचारों को क्रमशः क्रमबद्ध रूप से विकसित करना प्राथमिक स्तर के शिक्षण का उद्देश्य है।
7. छात्रों को इस प्रकार की क्षमता से युक्त करें कि वे निर्धारित ज्ञान का सस्वर वाचन कर सकें।
8. छात्रों के उच्चारण को शुद्ध बनाना और जिससे वे पाठ्यक्रम के स्तर की भाषा को भली-भाँति बोल सके।
9. छात्रों को इस योग्यता तक पहुँचाना कि वे निर्धारित पाठ्यक्रम की शब्दावली व समकक्ष स्तर की शब्दावली को समझ सकें।
10. सुलेख एवं श्रुतिलेख पर विशेष बल देना चाहिए।
11. छात्रों को पढ़े हुए तथ्यों को वार्तालाप या नाटकीयता के रूप में ढ़ालना चाहिए। इससे उनमें अभिव्यक्ति व भावाभिव्यक्ति के भावों का विकास होता है।
12. पढ़ने की गति के अतिरिक्त पठन की शुद्धता पर भी पर्याप्त ध्यान देना चाहिए।

13. छात्रों को पढ़ने की आदत डालना, लेख या पाठ का भाव ग्रहण करने के योग्य बनाना हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य है।

14. छात्रों को लिपि का सही ज्ञान कराया जाए तथा उनका जमकर अभ्यास कराया जाये।

प्रश्न 2. द्रुत वाचनोदिष्ट गद्य पाठ के उद्देश्य स्पष्ट करिये। पाठ-योजना के प्रमुख सोपानों का वर्णन करिये।

उत्तर– द्रुत-पाठ का अध्ययन तभी किया जा सकता है, जबकि विद्यार्थी को भाषा का कुछ समुचित ज्ञान हो गया हो और उसका संक्षिप्त-सा शब्द-भण्डार बन चुका हो।

द्रुत-पाठ का उद्देश्य–

थाम्पसन एण्ड वायट ने द्रुत-पाठ के उद्देश्यों को व्यक्त करते हुए कहा है—''द्रुत पाठ एक बौद्धिक, साहित्यिक और शुद्ध भाषा सम्बन्धी उद्देश्य है।''

1. बौद्धिक विकास—बालक के ज्ञान की सीमाएँ द्रुत-पाठ का आधार लेकर ही व्यापक बनती है। ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के साथ-साथ व्यक्ति का दृष्टिकोण विशाल होता जाता है। नवीन विषयों, जैसे—महापुरुषों का जीवन चरित्र, नीति सम्बन्धी कहानियाँ, सामाजिक सम्बन्धों का नवीनतम दर्शन, सम्पूर्ण विश्व सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि पर लिखे गये लेख उसके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में सफल होते हैं।

2. साहित्यिक प्रेम—सूक्ष्म अध्ययन, विस्तृत अध्ययन के लिए मार्ग प्रस्तुत करता है। किसी विशेष लेखक का एक पाठ पढ़ने के उपरान्त कभी-कभी विद्यार्थी उसकी सभी कृतियों का अध्ययन करना चाहता है, जिसका सुअवसर उसे विस्तृत अध्ययन के क्षेत्र में ही मिल पाताहै। पढ़ने जाने की कला के फलस्वरूप साहित्य के प्रति अपरिमित प्रेम-भाव जाग पड़ता है।

3. भाषा सम्बन्धी उद्देश्य—व्यापक अध्ययन के फलस्वरूप भाषा को समझने की क्षमता बढ़ती जाती है। सूक्ष्म अध्ययन के शब्द-भण्डार तथा सूक्ति-भण्डार की वृद्धि सूक्ष्म रूप से होती है, किन्तु विस्तृत अध्ययन के द्वारा उस शब्दावली का प्रयोग देखने को मिल जाता है। द्रुत-पाठ द्वारा विद्यार्थियों का शब्द-भण्डार बहुत बढ़ता जाता है तथा ज्ञात शब्दों पर अधिक अधिकार तथा विश्वास होता जाता है।

4. स्वज्ञानार्जन की उत्कण्ठ आकांक्षा—भाषा पर अधिकार पाते जाने की उपर्युक्त प्रणाली विद्यार्थी में एक ऐसी आत्म-शक्ति को उत्पन्न करती है, जिससे वह अनुभव करता है कि वयं कुछ भी कर सकता है। प्राइमरी कक्षाओं के उपरान्त भाषा की प्रारम्भिक सृष्टि के बाद अपने आप पढ़ने जाने की योग्यता होती है, जिसका विचार मात्र मानव-मात्र को हर्षोन्मत्त कर देता है।

5. शीघ्रतापूर्वक समझते हुए पढ़ने का अभ्यास—शीघ्रतापूर्वक किसी पाठ को पढ़कर इसका परीक्षण पठित अंश पर किए गए प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करके किया जा सकता है। प्रश्नोंके उत्तर में समर्थ बनाना भी द्रुत-पाठन का उद्देश्य है, जिससे ग्राह्यता पर प्रकाश पड़ेग। शीघ्रता की पूर्ति के लिए हम सस्वर पाठ न करवाकर, बिना होंठ हिलाए मौन पाठ की शिक्षा देते हैं; जिससे समय और शक्ति की बचत करते हुए विद्यार्थी सस्वर गति से पढ़ने में समर्थ होता है।

6. सारांश की शक्ति—अन्तिम उद्देश्य है कि अधिक परिणाम में पढ़े हुए अंश का संक्षेप में स्मरण करने की शक्ति आ जाये। संक्षिप्त सार बनाने की प्रवृत्ति डालने से विद्यार्थी को अध्ययन से लाभ होगा। उसके विचार आवश्यक अंगों पर केनिद्रत होंगे और इस प्रकार उसकी स्मरण शक्ति के साथ चयन की कला का भी विकास होगा।

द्रुतवाचनोदिष्ट गद्य शिक्षण की पाठ-योजना के सोपान निम्न हैं—

1. **उद्देश्य निर्धारण**—इस सोपान में द्रुतवाचन के उद्देश्य एवं अपेक्षित परिवर्तन का उल्लेख किया जाना है।
2. **प्रस्तावना**—बालकों के पूर्व ज्ञान के आधार पर प्रश्न पूछे जाते हैं।
3. **उद्देश्य कथन**—इसमें प्रस्तुत पाठ का (द्रुतवाचन) उल्लेख किया जाता है।
4. **प्रस्तुतीकरण**—प्रस्तुत पाठ का प्रस्तुतीकरण।
5. **बोध-प्रश्न**—प्रस्तुत पाठ के केन्द्रीय भाव के मुख्य-मुख्य प्रश्न श्यामपट्ट पर लिख दिये जाते हैं, जिससे बालक को दत्तचित्त होकर पढ़ने की प्रेरणा मिलती है।
6. **मौन वाचन**—छात्रों को मौन वाचन करने का निर्देश दे दिया जाए। मौन वाचन के पश्चात् श्यामपट्ट के प्रश्नों के उत्तर छात्रों से हल करवाएँ।
7. **बोध-प्रश्न**—श्यामपट्ट पर लिखे प्रश्नों को पूछा जाए, ये विश्लेषणात्मक होंगे।
8. **पुनरावृत्ति प्रश्न**—इसमें संश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाए, जिनसे छात्र सार रूप में उत्तर दे सकें।

इकाई-10

प्रश्न 1. किंडर गार्टन प्रणाली के प्रवर्तक है—

(अ) डॉ. मारिया (ब) सीताराम चतुर्वेदी

(स) फ्रॉबेल (द) मदन मोहन मालवीय (स)

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों में से कौनसा वाक्य शुद्ध है ?

(अ) अनेकों लोग मेरे दुश्मन है।

(ब) राजस्थान में मेरा ठाठ कुछ और ही है।

(स) लोग मुझे अन्न का राजा कहते हैं।

(द) मेरे लिए खेत की जुताई भी जरूरी है। (अ)

प्रश्न 3. वाक्य होता है—

(अ) ध्वनियों का समूह (ब) एक पंक्ति

(स) सार्थक शब्दों का समूह (द) शब्दों का समूह (स)

प्रश्न 1.प्रारम्भिक स्तर पर रचना शिक्षण की विधियों का वर्णन करो।

उत्तर– उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए रचना-शिक्षण की परम्परागत विधियाँ निम्नलिखित हैं—

1. खेल विधि—खेल में बालकों की स्वाभाविक रुचि होती है। यदि शब्द-निर्माण, वाक्य-निर्माण आदि भाषायी कार्य खेल ही खेल में सिखा दिये जायें तो छात्रों को भाषा सीखने में कठिनाई नहीं होती। लेकिन यदि उनको कार्य का रूप दिया जाता है तो उनको करने में बालकों में अरुचि पैदा हो जाती है। उदाहरण के लिए विलोमार्थक, समानार्थक शब्दों को याद करना बालकों को भारस्वरूप मालूम पड़ता है। यदि इन शब्दों को याद कराने केलिए कक्षा में ही भाषायी खेलों का आयोजन किया जाय तो वे उन्हें बड़ी सरलता से सीख लेते हैं।

2. प्रश्नोत्तर विधि—किसी निबन्ध की रचना के लिए इस परम्परागत रचना प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। अध्यापक एक पश्नावली तैयार कर लेता है जिससे प्रशनों को पूछने से सम्पूर्ण निबन्ध की रूपरेखा तैयार हो जाती है। निबन्ध को विकसित करने का यह बड़ा ही रोचक तरीका है।

3. चित्र-रचना विधि—बालकों का ध्यान थोड़े समय तक एक ही वस्तु पर केन्द्रित रहता है किन्तु यदि कोई आकर्षक वस्तु उसके सामने होती है तो उनका ध्यान उस वस्तु पर स्थिर रहता है। चित्र ऐसी वस्तु है जिसके रंग, उभार तथा पृष्ठभूमि छात्रों के ध्यान को आकृष्ट कर लेती है। अत: कक्षा में चित्रों के माध्यम से रचना शिक्षण करन से छात्रों का ध्यान निरन्तर अपने विषय में लगा रहता है।

4. शब्द-प्रदान विधि—किसी विषय पर अध्यापक बालकों को शब्द-समूह दे देता है जो उनके लिए संकेत का कार्य करते हैं। उनके विचार एक-एक करके उठते जाते हैं और रचना कार्य में समर्थ हो जाते हैं। वास्तव में उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रश्नोत्तर और शब्द प्रदान विधि का ही अनुसरण अधिक किया जाता है।

इकाई-11

प्रश्न 1. लिखित गृहकार्य में अशुद्धियों को दूर करने का उपाय है—

(अ) बालकों को अपमानित करना (ब) बालकों को दण्ड देना

(स) बालकों को अभ्यास करवाना (द) बालकों को पुनः गृहकार्य देना (स)

प्रश्न 2. झिझक दूर करने का खेल है—

(अ) अन्त्याक्षरी (ब) दर्पण का खेल

(स) तुकबन्दी (द) कहानी कथन (ब)

प्रश्न 3. मौखिक अभिव्यक्ति विकसित करने के लिए आवश्यक है—

(अ) स्वाध्याय पद्धति (ब) डाल्टन पद्धति

(स) खेल पद्धति (द) प्रोजेक्ट पद्धति (स)

प्रश्न 4. लिखित अभिव्यक्ति में शिक्षा की विधि नहीं है—

(अ) सुलेख (ब) निबन्ध लेखन

(स) कहानी लेखन (द) वार्तालाप (द)

प्रश्न 1. विद्यार्थियों को लिखित गृह-कार्य क्यों दिया जाता है ? गृह-कार्य संशोधन में शिक्षकों को क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए ?

उत्तर– अध्यापक कक्षा में बालकों को जो कुछ भी पढ़ाता है, वह छात्रों की समझ में आया अथवा नहीं आया इसको देखने के लिए अनेक विधियाँ अपनाता है। विद्यार्थी द्वारा घर पर कार्य करके लाये हुए कार्य को शिक्षक द्वारा जाँचा जाता है और जाँच के द्वारा ही वह यह देखता है कि उसके द्वारा पढ़ायी हुई बात विद्यार्थियों के समझ में आयी अथवा नहीं।

अध्यापक द्वारा दिये गये प्रश्नों का जब विद्यार्थी स्वयं उत्तर लिखकर लाता है तो उसे गृहकार्य कहा जाता है। गृहकार्य के द्वारा विद्यार्थी स्वयं अभ्यास करके सीखता है। लिखित गृह-कार्य का अलग-अलग कक्षा के स्तरों पर अलग-अलग महत्त्व होता है। छात्रों को लिखित गृहकार्य निम्नलिखित कारणों से दिया जाता है—

1. लिखित गृह-कार्य द्वारा शिक्षक छात्रों की कमजोरियों से परिचित हो जाता है और वह शिक्षण विधियों में अपेक्षित सुधार कर सकता है।
2. इसके द्वारा छात्रों में स्वाध्याय की प्रेरणा जागृत होती है।
3. इसके द्वारा छात्र पठित पाठ को आत्मसात् करने की क्षमता उत्पन्न कर सकते हैं।
4. इससे छात्रों में आत्मविश्वास पैदा होता है।
5. लिखित गृह-कार्य द्वारा पाठ की पुनरावृत्ति हो जाती है।

6. लिखित गृह-कार्य ही एक ऐसा कार्य है, जिससे छात्रों में स्पष्ट, स्वच्छ, क्रमबद्ध एवं शीघ्र कार्य करने की क्षमता उत्पन्न होती है।

लिखित गृह-कार्य में संशोधन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. छात्रों के गृह-कार्य का संशोधन नियमित रूप से होना चाहिए।
2. छात्रों द्वारा गृह-कार्य में की जाने वाली गलतियों को सुधारा जाना चाहिए।
3. गृहकार्य संशोधन में यह भी ध्यान रखें कि छात्र स्वयं ही गृह-कार्य करके लाते हैं या नहीं।

प्रश्न 2. बालकों को लिखना किस प्रकार सिखाया जाये ? इसके लिए कौनसी विधियाँ प्रचलित हैं ? वर्णन करिये।

उत्तर– बालकों को लिखना सिखाने के लिए निम्न विधियाँ प्रचलित हैं—

1. रेखाओं के माध्यम से—कुछ विद्वानों के अनुसार तीन या चार वर्ष की आयु के बालक सीधी, तिरछी या उल्टी-सीधी रेखायें खींचने लगते हैं। अत: इस अवस्था में उनको रेखा खींचने का अभ्यास कराना चाहिए। इस प्रकार सीधी-टेढ़ी रेखायें, वृत्त, अर्द्धवृत्त आदि खींचने का काम-चलाऊ अभ्यास हो जायेगा। इसके बाद परिचित वस्तुओं के मात्रा-रहित नामों के लिखने का अभ्यास करना उचित है। छात्रों के हाथ जब सध जाएँ तब मात्रा लगाने का अभ्यास कराया जाए।

2. मॉन्टेसरी विधि—मॉन्टेसरी प्रणाली में लिखना सिखाने के लिए तीन विधियों का प्रयोग किया जाता है।

1. लेखनी पकड़ने का अभ्यास।
2. अक्षरों का स्वरूप समझना।
3. अक्षरों का ध्वन्यात्मक विश्लेषण।

3. अनुकरण विधि—अध्यापक श्यामपट्ट, स्लेट या तख्ती पर स्पष्ट और सुडौलता के साथवर्ण लिख दता है। बालक अध्यापक द्वारा लिखे गये वर्णों को लिखते हैं। इस प्रकार अनुकरण के माध्यम से बालक लिखना सीख जाते हैं।

4. पेस्टलॉजी विधि—इस विधि का प्रमुख आधार सरल से कठिन की ओर चलना है। अक्षर ज्ञान इसमें कराया जाता है। अक्षरों की आकृति को विभिन्न टुकड़ों में विभाजित कर लिया जाता है। तत्पश्चात् टुकड़ों के योग से उस अक्षर की रचना कराई जाती है। पहले उन वर्णों को सिखाया जाता है, जो सरल होते हैं।

5. जेकासर विधि—इस विधि में छात्रों के सामने सम्पूर्ण वाक्य प्रस्तुत किये जाता है। छात्र अनुकरण करते हुए वाक्य का एक शब्द लिखते हैं तथा सम्पूर्ण वाक्य को पुन: मिलाकर उसकी शुद्धता का पता लगाते हैं। अन्त में अध्यापक स्मृति के आधार पर सम्पूर्ण वाक्य लिखने केलिए कहता है, परन्तु छोटे बच्चों के लिए यह विधि अत्यन्त जटिल तथा कठिन होतीहै। बालक सम्पूर्ण वाक्य को ग्रहण करने में असमर्थ रहते हैं।

मनोवैज्ञानिक विधि—बालकों को सर्वप्रथम वर्णमाला के अक्षर तथा शब्द आदि सिखाने की अपेक्षा पूर्ण वाक्य को बोलना तथा उनका लिखना सिखाया जाए। एक विद्वान का कथन है कि ''सर्वप्रथम हमें बच्चों को

बोलना सिखाना चाहिए। इन पूर्ण वाक्यों के लिए किसी चिह्न विशेष के सिखाने की आवश्यकता नहीं है। भाग-चित्र इनके मस्तिष्क में बज जाएँ इतना ही पर्याप्त होता है। जब बच्चे मौखिक रूप से पूर्ण वाक्य बोलने लगें और उनकी कर्मेन्द्रियाँ तथा ज्ञानेन्द्रियाँ दृढ़ हो जाएँ, तो उन्हें पढ़ने व लिखने के लिए तैयार करना चाहिए।''

लिखित अभिव्यक्ति शिक्षण में ध्यान देने योग्य सावधानियाँ :

1. जिस अक्षर को बालक थोड़े प्रयत्न द्वारा लिख सकते हैं पहले उसको ही चुना जाए, तो अति उत्तम है। फिर उस अक्षर से चार-पाँच वर्णों का निर्माण कराया जाए।
2. यदि बालक को सर्वप्रथम उसका नाम लिखना ही सिखाया जाए तो ऐसा करने से वह प्रसन्नता का अनुभव करेगा और लेखन में रुचि लेने लगेगा।
3. लिखना सिखाने में सदा 'सरल से कठिन' सूत्र का ध्यान रखा जाए। पहले बालकों से सरल शब्द लिखवाये जाएँ, बाद में कठिन।
5. प्राथमिक अवस्था में बालक बड़े-बड़े अक्षर लिखें। धीरे-धीरे करके उनके आकार को छोटा किया जाए।
6. लिखते-लिखते जब छात्रों के हाथ सध जाएँ तब लिखने की गति तेज की जाए।
7. बालकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए अरुचिकर शब्दों तथा अक्षरों की पुनरावृत्तिकी जा सकती है।

इकाई-12

प्रश्न 1.प्राथमिक स्तर पर रचना कार्यों के लिए कौनसी विधि उपयुक्त है ?

(अ) रूपरेखा विधि (ब) अनुकरण विधि

(स) सूझ विधि (द) प्रश्नोत्तर विधि (द)

प्रश्न 2. पत्र-लेखन में आवेदन पत्र में दिनांक कहाँ पर लिखी जाती है ?

(अ) दायीं ओर प्रारम्भ में (ब) बायीं ओर प्रारम्भ में

(स) बायीं ओर अन्त में (द) दायीं ओर अन्त में (अ)

प्रश्न 3. गृह कार्य का मुख्य उद्देश्य है—

(अ) सुलेख की योग्यता विकसित करना

(ब) बालकों को व्यस्त करना

(स) सम्बन्धित पाठ में रुचि पैदा करना

(द) बालकों को पढ़ाए गए पाठ को दोहराने का अवसर देना (द)

प्रश्न 4. लिखित कार्य के संशोधन हेतु 'शब्द भूलने पर' के लिए अपनाए जाने योग्य विशेष चिह्न होगा—

(अ) + (ब) = (स) × (द) ^ (द)

प्रश्न 5. गद्य शिक्षण का ज्ञानपरक उद्देश्य नहीं है—

(अ) विषय-वस्तु का ज्ञान (ब) वाचन ज्ञान

(स) भाषा तत्त्व का ज्ञान (द) रचना रूपों का ज्ञान (ब)

प्रश्न 6. कहानी शिक्षण की उपादेयता है—

(अ) आत्म-संरक्षण प्रदान करना (ब) सृजनात्मकता का विकास

(स) चारित्रिक गुणों का विकास करना (द) संवेगों को नियन्त्रित करना सिखाना (ब)

प्रश्न 7. छोटे बच्चों की कल्पना शक्ति विकसित करने का माध्यम है—

(अ) पौराणिक कथाएँ (ब) रसानुभूति कविताएँ

(स) महापुरुषों की जीवनियाँ (द) फ्लैश कार्ड (अ)

प्रश्न 8. ''आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति ही काव्य है।'' परिभाषा है—

(अ) एडसन (ब) कालरिज

(स) जयशंकर प्रसाद (द) वर्डसर्थक (स)

प्रश्न 1. गहन अध्ययन से क्या तात्पर्य है ? व्यापक अध्ययन का अर्थ बताते हुए दोनों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'गहन अध्ययन' से तात्पर्य पाठ्य-पुस्तक के ऐसे अध्ययन से है, जिसमें विषय-वस्तु का विस्तृत तथा सूक्ष्म अध्ययन किया जाये। यहाँ प हमारा प्रधान उद्देश्य पाठ्य-पुस्तक का समुचित वाचन तथा बालक-बालिकाओं के शब्द और सूक्ति भण्डार की वृद्धि से है।

व्यापक अध्ययन (द्रुत वाचन)

उद्देश्य :

1. छात्र-छात्राओं के मन में पुस्तक-वाचन के प्रति रुचि जागृत करना।
2. उन्हें इस योग्य बनाना कि धीरे-धीरे वे भाषा का पूरा अधिकार प्राप्त कर लें।
3. उनकी ज्ञान-परिधि को बढ़ाना।
4. महान् व्यक्तियों के साथ उनका सम्पर्क बढ़ाना।

भाषा के माध्यम द्वारा ही छात्र-छात्राओं में पुस्तक वाचन के प्रति रुचि जागृत की जा सकती है।

व्यापक अध्ययन और गहन अध्ययन में अन्तर : व्यापक अध्ययन के द्वारा हम छात्र-छात्राओं को इस योग्य बनाते हैं कि वे स्वतन्त्र रूप से पढ़ सकें, पुस्तकालय का ठीक-ठीक उपयोग कर सकें तथा अध्यापक की कम से कम सहायता लेते हुए, मौन वाचन के द्वारा भाव को समझ सकें।

गहन अध्ययन में शब्द तथा वाक्यांशों का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन किया जाता है। परन्तु व्यापक अध्ययन में बालक तथा बालिकाओं

इकाई-13

प्रश्न 1. व्यास प्रणाली किस प्रणाली का विस्तृत रूप है ?

(अ) प्रश्नोत्तर प्रणाली (ब) समीक्षा प्रणाली

(स) व्याख्या प्रणाली (द) तुलना प्रणाली (स)

प्रश्न 2. जलद-जलज शब्द का युग्म अर्थ होगा—

(अ) बादल-कमल (ब) कमल-बादल

(स) मोती-कमल (द) कमल-मोती (अ)

प्रश्न 1. कविता से आप क्या समझते हैं ? इसके प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– कविता की परिभाषाएँ :

1. विश्वनाथ ने 'साहित्य दर्पण' में रसात्मक वाक्य को ही काव्य माना है।
2. कविराज जगन्नाथ ने 'रस गंगाधर' में रमणीय अर्थ को प्रतिपादन करने वाले शब्द को ही काव्य माना है।
3. साहित्याचार्य अम्बिकादत्त व्यास ने लोकोत्तर आनन्द देने वाले प्रबन्ध को काव्य की संज्ञा दी है।
4. आनन्दवर्धन ने ध्वनि को काव्य कहा है, 'काव्यास्यात्मा ध्वनिः'।
5. कुन्तक वक्रोक्ति को जीवित काव्य कहते हैं।
6. वामन रीति को काव्य की आत्मा मानते हैं।
7. प्रकृतिवादी कवि वर्डसवर्थ मानव और प्रकृति की कल्पना को काव्य की संज्ञा देते हैं।
8. कार्यालय काव्य को संगीतमय विचार मानते हैं।
9. मैथ्यु अर्नाल्ड 'जीवन की सम्यक् आलोचना ही कविता है।'

कविता शिक्षण के उद्देश्य :आनन्द की अनुभूति कराना।

2. छात्रों में कवि के भावों, कल्पनाओं और अभिव्यक्ति की सुन्दरता की जाँच करने की योग्यता विकसित करना।
3. उदात्त भावों के उत्पादन एवं संवर्द्धन द्वारा उनके सन्तुलित और लोक-कल्याणकारी चरित्र का निर्माण करना।
4. लय, ताल और भाव के अनुसार कविता पाठ करने की योग्यता पैदा करना।
5. भाव-भंगिमाओं और स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ कविता पाठ का अभ्यास करना।
6. छात्रों को कविता में रुचि पैदा कर उन्हें काव्य-रचना के लिए प्रोत्साहित करना।

7. विविध कविता शैलियों का परिचय कराकर उन्हें अपनी योग्य शैली के विकास में सहायता देना।

प्रश्न 2. कविता शिक्षण की दृष्टि से बोध-पाठ तथा रस-पाठ का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– बोध-पाठ—राजस्थानी, अवधी या किसी खड़ी बोली की कविता से भी अधिक कठिन शब्द एवं मुहावरों के अर्थ तथा अन्तर्कथा बताने के लिए भी पहले दिन कविता का बोध-पाठ अवश्य कर लेना चाहिए। कठिन शब्दों के निवारण के अतिरिक्त कविता पर बोध-प्रश्न भी पूछने चाहिए जिससे बालक कविता के मूल पाठ व केन्द्रीय भाव को समझ सकें।

बोध-पाठ की शिक्षण-प्रक्रिया :

1. उद्देश्य तथा अपेक्षित योग्यताओं का निर्धारण।
2. पूर्वज्ञान की सीमा का निर्धारण।
3. प्रस्तावना।
4. पाठ्यांशाभिसूचन (उद्देश्य-कथन)।
5. प्रस्तुतीकरण : (अ) आदर्श वाचन, (ब) अनुकरण वाचन, (स) भाषायी अनुशीलन—दो दृष्टि से—(i) रूप बोध, (ii) वस्तु बोध (द) भावानुबोधन, (य) पुनः वाचन
6. मूल्याँकन।

रस-पाठ—ऐसी कविता जिसको पहले दिन बोध-पाठ से शुरू किया गया हो, उनका दूसरेदिन रस-पाठ होना चाहिए जिससे छात्र कविता का भाव-सौन्दर्य तथा भाषा-सौन्दर्य ग्रहण करते हुए, रसानुभूति कर सकें। जिस कविता में कठिन शब्द कम हों या नहीं हो, उस कविता का पहले दिन ही रस-पाठ किया जा सकता है। जिन कविताओं में नीति सम्बन्धी दोहे हों, उनका रस-पाठ न होक व्याख्या पाठ होता है। वे हृदय के कोने को नहीं छू पाते, जहाँ रसानुभूति होती है।

रस-पाठ की शिक्षण प्रक्रिया :

1. उद्देश्य तथा अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन।
2. पूर्व-ज्ञान की जानकारी।
3. उत्प्रेरणात्मक उपक्रम (केवल उन कविताओं में जिन्हें बोध-पाठ के रूप में नहीं पढ़ाया गया।)
4. पाठ्यांशाभिसूचना (उद्देश्य कथन)
5. प्रस्तुतीकरण : (अ) आदर्श वाचन, (ब) द्वितीय आदर्श वाचन, (स) अनुकरण वाचन, (द) काठिन्य निवारण, (य) भावानुभावन—(i) भाव-विश्लेषण, (ii) पुनः वाचन, (iii) भाव संश्लेषण, (र) वाचन।
6. उपायोजन।
7. अन्तिम वाचन।
8. मूल्याँकन।

प्रश्न 3. कविता शिक्षण की प्रमुख प्रणालियाँ कौनसी हैं ?

उत्तर– **1. गीत प्रणाली**—प्रारम्भिक कक्षाओं में कविता शिक्षण की यही प्रमुख प्रणाली है क्योंकि बालक को जन्म से संगीतप्रिय होता है। वे गीत गाने मे रुचि लेते हैं। गीत गाने से उनका हृदय प्रसन्न हो जाता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में कविता शिक्षण का उद्देश्य होता है बालकों को सस्वर बनाना, ताल में लाना और संगीत से परिचय कराना। अत: शिक्षण में संगीत काही उनके पाठ्यक्रम में समावेश किया जाता है। अध्यापक स्वर, ताल औ लय के साथ गीता पठन करता है।

2. अभिनय प्रणाली—जो बालगीत अभिनय प्रधान हों उनको अभिनय द्वारा भी पढ़ाया जा सकता है। कुछ गीत संगीत-प्रधान होते हुए भी अभिनेय होते हैं। यदि शिक्षक अभिनय में रुचि रखता है तो कक्षा में ऐसे गीतों का अभिनय करा सकता है। अभिनय प्रणाली से कविता में रुचि उत्पन्न होती है, छात्र कवि के भावों को समझकर उसमें लीन हो जाते हैं।

3. अर्थ-बोध प्रणाली—इस प्रणाली में शिक्षक कविता के अंशों का एक-एक पद करके अर्थ-बोध कराते चलते हैं, कविता शिक्षण की यह विधि सबसे कम स्पष्ट साध्य और सबसे अधिक मनोवैज्ञानिक है। यह विधि कविता शिक्षण के किसी उद्देश्य की पूर्ति भी नहीं करती।

4. व्याख्या प्रणाली—इस प्रणाली में कवि एक-एक पद की क्रम से व्याख्या करता है। कवि के दार्शनिक मद को समझाता है, उसके उद्देश्य को स्पष्ट करता है। कविता की भाषा, शैली, रस, अलंकार आदि की विवेचना करता है। प्रत्येक शब्द औचित्य, श्रुति, मधुरता, शब्द-बल, अर्थ-दोष आदि की व्याख्या करता है। प्रासंगिक बातों की जानकारी देता है।

5. तुलनात्मक प्रणाली–

1. एक ही भाषा के कवियों की तुलना की जाती है।
2. मित्र भाषाओं के कवियों को ऐसी पंक्तियाँ समान्तर रूप से प्रस्तुत की जाती हैं जिनमें भाव का साम्य होता है।
3. एक ही भाव वाली एक ही कवि की कविताओं को समान्तर रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

समीक्षा प्रणाली—समीक्षा का अर्थ है अच्छी तर देखना। इस प्रणाली में शिक्षक जिस कविता का शिक्षण करता है, उसको आलोचनात्मक सिद्धान्तों की कसौटी पर कसता है। वह छात्रोको कवि की भाषा-शैली का बोध कराता है। प्रश्नोत्तर प्रणाली द्वारा भाव-व्यंजना स्पष्ट करता है।

इकाई-14

प्रश्न 1.व्याकरण शिक्षण में किस विधि में पहले परिभाषा तथा बाद में उदाहरण बताए जाते हैं ?

(अ) आगमन-निगमन विधि (ब) आगमन विधि

(स) प्रासंगिक विधि (द) निगमन विधि (ब)

प्रश्न 1. व्याकरण शिक्षण को प्रभावकारी बनाने के लिए किन-किन विधियों का उपयोग किया जाता है और क्यों ?

उत्तर– व्याकरण का विषय प्राय: विद्यार्थियों को शुष्क और नीरस लगता है। व्याकरण के प्रति आनन्द भाव के सजग होने हेतु सर्वप्रथम उसकी शिक्षण विधि में आमूल-चूल परिवर्तन करना होगा। सामान्यत: शिक्षक व्याकरण शिक्षण की निम्नलिखित विधियाँ प्रयोग में लाते हैं—

1. निगमन प्रणाली—इस प्रणाली में छात्र को नियम बता दिये जाते हैं। छात्र उनको रट लेते हैं। इस प्रणाली के दो रूप हैं—सूत्र प्रणाली और पुस्तक प्रणाली। सूत्र का अर्थ है—नियम। इसमें व्याकरण की पुस्तकों से नियम रटाये जाते हैं। निगमन प्रणाली पूरी तरह से अमनोवैज्ञानिक है। इसमें छात्रों को स्वयं सीखने, निरीक्षण, चिन्तन और नियमीकरण का कोई अवसर नहीं मिलता।

निगमन प्रणाली में यदि हमें 'विशेषण' पढ़ाना है तो सर्वप्रथम विद्यार्थियों को विशेषण की परिभाषा से अवगत करा दिया जायेगा। इसके पश्चात् उदाहरण दिये जायेंगे।

2. आगमन प्रणाली—विशेष उदाहरणों की सहायता से छात्र स्वयं-निरीक्षण चिन्तन करते हुए नियम निकालते हैं। इस प्रणाली के निम्नलिखित चार सोपान हैं—

(क) शिक्षक द्वारा उदाहरण का प्रस्तुतीकरण।

(ख) **निरीक्षण**—छात्रों द्वारा उदाहरणों को देखकर उनका विश्लेषण करना, समानताका पता लगाना।

(ग) **नियमीकरण**—समानता के आधार पर नियम निकाला।

(घ) **परीक्षण**—निकाले गये नियम की सत्यता के लिए परीक्षण करना।

निम्न माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों के लिये यह प्रणाली उपयुक्त है क्योंकि इसमें उनको स्वयं सीखने का अवसर मिलता है। ऐसा सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है। इस प्रणाली में निम्नांकित सूत्रों का प्रयोग किया जाता है—

(क) स्थूल से सूक्ष्म की ओर ।

(ख) मूर्त से अमूर्त की ओर।

(ग) ज्ञात से अज्ञात की ओर।

(घ) विशिष्ट से सामान्य की ओर।

व्याकरण शिक्षण में इसी प्रणाली का प्रयोग किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों में अधिक से अधिक सुरुचि तथा क्रियाशीलता बनी रहे।

3. भाषा संसर्ग प्रणाली—भाषा संसर्ग प्रणाली में भाषा के सही रूप की जानकारी देने के लिए उत्तम लेखकों की रचनाएँ पढ़ायी जाती हैं अथवा सहायक पुस्तकों के रूप में पढ़ने को दी जाती हैं। भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान देने में इस प्रणाली से समय लगता है। इस प्रणाली से व्याकरण के नियमों की जानकारी अधूरी रह जाती है।

4. समवाय प्रणाली—व्याकरण शिक्षण को गद्य-शिक्षण, कविता शिक्षण, रचना शिक्षण के साथ सह-सम्बन्धित किया जाता है, इसलिए ही इसको समवाय प्रणाली कहते हैं।

प्रश्न 2. ''शब्दानुशासन ही व्याकरण है।'' कथन के आधार पर व्याकरण शिक्षण की महत्ता बताइये तथा इसके प्रमुख सोपान लिखिए।

उत्तर– विचारों के आदान-प्रदान के लिए जो माध्यम है, वह भाषा है। भाषा का आदि रूप सांकेतिक था और तत्पश्चात् मौखिक एवं लिखित भाषा के भी अनेक रूप विकसित हुए। भाषाओं के उन रूपों में नियमितता और स्थिरता लाने के लिए कुछ नियम भी बनाये होंगे, जो आज भी उस भाषा के साथ सम्बद्ध है। इन्हीं नियमों को हम व्याकरण कहते हैं। इनमें कुछ भारतीय और पाश्चात्य व्याकरणाचार्यों द्वारा दी गयी परिभाषाएं नीचे दी जा रही हैं—

पतञ्जलि मुनिकृत 'महाभाष्य' में व्याकरण के लिए 'शब्दानुशासन' का प्रयोग किया गया है।

डॉ. स्वीट ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'न्यू इंग्लिश ग्रामर' में व्याकरण को भाषा और उसकेस्वरूप को व्यावहारिक विश्लेषण बताया है।

प्राध्यापक सानौन्शिन ने 'दी सोल ऑफ ग्रामर ' में लिखा है कि ''व्याकरण केवल वाक्यों में शब्द-समूहों के विभेदों की व्याख्या करता है।''

इन सभी परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि व्याकरण:

1. भाषा में वाक्यों की, वाक्यों में शब्दों और शब्दों में अक्षरों की स्थिति और महत्त्व को स्पष्ट करता है।
2. भाषा से सम्बन्धित नियमों का बोध करता है।

वस्तुत: व्याकरण वह शास्त्र है जिसके ज्ञान और प्रयोग से भाषा में एकरूपता और रोचकता आती है।

संस्कृत की प्राच्य शिक्षा-प्रणाली में व्याकरण को आज भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो गई कि व्याकरण का उद्देश्य भाषा सिखाना नहीं, परन्तु भाषाके सम्बन्ध में इन बातों का ज्ञान कराना है—

1. भाषा रचना का ज्ञान कराना।
2. वाक्यों में आने वाले शब्द-समूहों के अन्तर को स्पष्ट करना।
3. भाषा सम्बन्धी कुछ विशेष प्रयोगों का अध्ययन।

4. भाषा से सम्बन्धित नियमों का कथन।

व्याकरण पाठ के सोपान :

आगमन-निगमन विधि से पढ़ाते हुए निम्नलिखित सोपानों का उपयोग किया जाता है—

1. परिचयात्मक विवरण।
2. उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन।
3. पूर्ण ज्ञान।
4. उत्प्रेरणात्मक-उपक्रम (प्रस्तावना)।
5. कार्य-संकेत या पाठ्यांशाभिसूचन (उद्देश्य-कथन)।
6. प्रस्तुतीकरण।

(अ) उदाहरणों की प्रस्तुति—इसके अन्तर्गत उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं। ये उदाहरण बालक के जाने-पहचाने हों तो ठीक रहेगा। बालक की पाठ्य-पुस्तक में से इनका चयन किया जा सकता है।

(ब) तुलना—छात्र उन उदाहरणों की तुलना करता है।

(स) नियमीकरण—तुलना एवं विश्लेषण-संश्लेषण करने पर छात्रों की सहायता हेतु नियम खोजा जाता है। तदनन्तर छात्रों को वह नियम लिखवा दिया जाता है।

(द) नियम की पुष्टि—प्राप्त किये गये नियमों को उदाहरणों पर आँका जाता है।

(य) आवृत्ति—इसमें सीखे हुए नियम का अभ्यास किया जाता है।

इकाई-15

प्रश्न 1.भाषा शिक्षण में अधिगम सामग्री के प्रयोग का क्या लक्ष्य है ?

(अ) अवधान को आकृष्ट करना

(ब) शिक्षक के ज्ञान में स्पष्टता लाना

(स) बालक का अनुभव विस्तार करना

(द) महत्त्वपूर्ण प्रत्यय एवं विषय में स्पष्टता लाना (द)

प्रश्न 2. वह श्रव्य-दृश्य सामग्री जिसकी सहायता से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है—

(अ) पुस्तक (ब) प्रोजेक्टर

(स) दूरदर्शन (द) चित्र, मॉडल (स)

प्रश्न 3. भाषा शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री का मुख्य प्रयोजन है—

(अ) छात्रों को नवीन उपकरणों की जानकारी देना

(ब) शिक्षक के कार्य को सरल बनाना

(स) छात्रों की विभिन्न इन्द्रियों को क्रियाशील बनाना

(द) पाठ में कक्षा का अवधान बनाए रखना (स)

प्रश्न 1. भाषा शिक्षण में भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग क्यों किया जाता है ? भाषा प्रयोगशाला की उपयोगिता एवं प्रकारों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर– भाषा प्रयोगशाला (Language Laboratory) भाषा शिक्षण के क्षेत्र में इलेक्ट्रोनिक्स की उपयोगिता का एक महत्त्वपूर्ण अंश है। भाषा प्रयोगशाला एक विशेष कक्षा होता है, जो विविध दृश्य, श्रव्य उपकरणों से युक्त होता है। सामान्यत: एक भाषा प्रयोगशाला चार-छह-आठ, बत्तीस टेप रिकॉर्डरों का एक क्रमिक व्यवस्थित संयोजन होता है। जिसके माध्यम से शिक्षार्थी/अध्येता भाषा-अध्ययन के लिए विविध प्रकार के अभ्यास करते हुए भाषा सीखते हैं।

भाषा प्रयोगशाला की उपयोगिता :

1. भाषा प्रयोगशाला के पाठ स्वयं में पूर्ण तथा स्व-आश्रित होते हैं।
2. शिक्षक की भूमिका परोक्ष होती है।
3. शिक्षण की प्रक्रिया मुख्यत: अभ्यासोन्मुख रहती है, जिसमें शिक्षार्थी को भाषा-व्यवहार के अभ्यास के लिए अधिक इच्छानुसार अवसर मिलता है।
4. भाषार्जन, भाषा-अभ्यास के लिए है। उपयुक्त वातावरण के निर्माण की अधिक सम्भावना है।

5. अन्य छात्रों के अध्ययन में बिना बाधा डालते हुए धीमी गति वाले शिक्षार्थी द्वारा स्व-गति से अभ्यास करना सम्भव।

6. शिक्षार्थी को जानकारी दिये बिना उसके कुछ कार्य/अभ्यास आदि की जाँच सम्भव है, जिससे कि शिक्षार्थी के मस्तिष्क पर समीक्षा भूत का मनोवैज्ञानिक कुप्रभाव नहीं पड़ता।

7. अन्य शिक्षार्थियों का समय नष्ट न करत हुए उनके अध्ययन में कोई बाधा पहुँचाये बिना प्रत्येक अध्येता पर व्यक्तिगत ध्यान देने की सुविधा होने के कारण शिक्षक/मॉनीटर अध्येता, शिक्षार्थी की अशुद्धियों को वहीं का वहीं सुधार सकता है।

भाषा प्रयोगशाला के प्रकार :

1. तारयुक्त भाषा पयोगशाला (Wired Language Laboratory)
2. तार रहित भाषा प्रयोगशाला (Wireless Language Laboratory)
3. श्रव्य-भाषा प्रयोगशाला (Audio Language Laboratory)
4. दृश्य-श्रव्य भाषा प्रयोगशाला (Audio-Visual Language Laboratory)
5. श्रव्य-निष्क्रिय भाषा प्रयोगशाला (Audio Passive Language Laboratory)
6. श्रव्य-सक्रिय भाषा प्रयोगशाला (Audio-Active Language Laboratory)
7. केन्द्र-संचालित भाषा प्रयोगशाला (Centrally Operated Language Laboratory)
8. व्यक्ति-संचालित भाषा प्रयोगशाला (Individually Operated Language Laboratory)
9. उभय-संचालित भाषा प्रयोगशाला (Dual Operated Language Laboratory)

प्रश्न 2.दृश्य-श्रव्य सामग्री का क्या अर्थ है ? हिन्दी शिक्षण में आप इनका प्रयोग किस प्रकार करेंगे ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–वे शैक्षिक उपकरण/उपादान जिनके प्रयोग के समय अध्येता मुख्यत: आँखों तथा कानों के माध्यम के साथ अपनी चिन्तन प्रक्रिया को और अधिक विकसित करने में सहायता प्राप्त करता है, उन्हें दृश्य-श्रव्य सामग्री के अन्तर्गत गिना जाता है। दृश्य-श्रव्य सामग्री में मुख्यत: चलचित्र दूरदर्शन, वीडियो की गणना की जाती है।

1. **चलचित्र**—भाषा शिक्षण में चलचित्र से अनेक लाभ हैं। जैसे—

1. चलचित्र श्रवण नेत्रोपकरण का सर्वोत्तम साधन है। सिनेमा देखते समय दर्शक को ऐसा लगता है कि जो कुछ मैं देख रहा हूँ, वह सत्य है। इसका बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है।
2. मानव मन पर गहरा प्रभाव डालने के लिए शिक्षा क्षेत्र में इसका काफी महत्त्व है।
3. स्पष्ट और शुद्ध भाषा सीखने में इससे बड़ी मदद मिलती है।
4. चलचित्र विद्यार्थियों का मनोरंजन करते हुए उन्हें जीवन की विभिन्न परिस्थितियों तथा लौकिक आचार-व्यवहार से परिचित कराता है।

5. यह प्रभावोत्पादक, अवसरानुकूल तथा भावानुकूल भाषा के व्यवहार में विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करता है।

6. इसके द्वारा दर्शनीय स्थानों के चित्र बहुत सुगमतापूर्वक दिखाए जा सकते हैं।

7. चलचित्र छात्रों को उत्तम मार्ग का दशन कराता है।

8. चलचित्र द्वारा विद्यार्थी की निरीक्षण शक्ति विकसित होती है।

9. महान लोगों का जीवन-चरित्र इनके द्वारा दिखाया जा सकता है। जैसे—सूर, तुलसी, गाँधी आदि।

10. इसके माध्यम से बधिर और कुसमायोजित छात्रों को अच्छी शिक्षा मिल सकती है।

2. टेलीविजन—इसमें नेत्र और श्रवण का संयुक्त प्रयोग होता है। इसमें रेडियो के साथ एक रजतपट भी होता है जिसमें बोलने वाला स्पष्ट दिखाई देता है। इसका महत्त्व रेडियो और सिनेमा जैसा ही है। यह केवल 50-60 मील की दूरी तय करता है।

3. अभिनय—अभिनय अथवा नाटक के सम्बन्ध में अन्यत्र स्वतन्त्र रूप से विचार किया गया है। नाटकीय दृश्य न केवल दर्शक के लिए लाभदायक है अपितु नाटकीय पात्र को भी यह शुद्ध उच्चारण, अभिनय-कला, बोलचाल और सहकारिता के व्यावहारिक प्रयोग में अभ्यास कराने के लिए अवसर प्रदान करता है।

4. वीडियो—वीडियो एक व्यय-साध्य किन्तु पर्याप्त मनोरंजक तथा उपयोगी उपकरण हैविद्यालयों में इसका उपयोग विशेष पाठ-योजनाओं के लिए किया जाता है।

प्रश्न 3. ''भाषा शिक्षण में इकाई योजना की उपयोगिता और उसकी सीमाओं'' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर– इकाई योजना का अर्थ—शिक्षा मे इकाई के रूप में पाठ्य-सामग्री को क्रमबद्ध ढंग से पढ़ाने की योजना एक नया प्रयोग है। यह योजना ''गेस्टास्ट मनोविज्ञान'' पर आधारित है। इसके अनुसार हम (i) किसी वस्तु को उसके सम्पूर्ण रूप में ग्रहण करते हैं, (ii) दूसरा यह है कि एक वस्तु दूसरी की अपेक्षा अधिक ग्रहण की जाती है।

अत: अध्यापक को शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया में प्रत्येक प्रकरण क्रमबद्ध योजना में प्रस्तुत करते हुए दैनिक पाठ-योजनाओं में 'इकाई योजना' का प्रयोग कर अपने शिक्षण कार्य को स्वाभाविक एवं प्रभावशाली बनाना चाहिए।

इकाई योजना की परिभाषाएँ :

विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने 'इकाई योजना' को सोद्देश्य क्रियाओं का संगठन माना है। जो किसी न किसी समस्या से सम्बन्धित होती है। पहले विषय-वस्तु को समग्र रूप में प्रस्तुत रती है और बाद में अनुभवों, क्रियाओं और व्यवहारों से सम्बन्ध स्थापित करती है। इस प्रकार 'इकाई पाठ-योजना' शिक्षण प्रक्रिया को स्पष्ट, प्रभावशाली एवं उपयोगी बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

रिस्क—''इकाई किसी योजनात्मक समस्या से सम्बन्धित अधिगम की सम्पूर्णता का प्रतीक है।''

इकाई योजना की उपयोगिता एवं महत्त्व :

शिक्षण-प्रक्रिया में इकाई-योजना वैज्ञानिक युग की देन है। भाषा शिक्षण में इकाई योजना की निम्न कारणों से उपयोगिता है—

1. पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु को छोटी-छोटी सार्थक इकाइयों में वर्गीकृत एवं क्रमायोजित करके वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक, दैनिक शिक्षण की योजना अध्यापक बना सकता है।
2. प्रत्येक पाठ या प्रकरण को भागों में विभाजित कर बालकों को पढ़ाया जा सकता है।
3. भाषा, शैली एवं स्वरूप के आधार पर पाठ्य-सामग्री को बाँटा जा सकता है।
4. उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होती है। 5.शिक्षण-विधियों, सहायक सामग्री आदि के चयन में सहायक होती है।
6. इकाई योजना द्वारा विषय-सामग्री का मूल्यांकन करके निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति का अनुमान लगाया जा सकता है।

इकाई योजना निर्माण के सिद्धान्त :

1. इकाई ऐसी होनी चाहिए, जो छात्र एवं विद्यालय दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हो।
2. इकाई लचीली होनी चाहिए जिससे अध्यापक परिस्थिति विशष में उसमें थोड़ा हेर-फेर कर सके।
3. इकाई का निर्माण करते समय बच्चों की रुचि, रुझान एवं आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए।
4. इकाई का निर्माण करते समय उपलब्ध समय, विद्यालय की स्थिति, उपलब्ध साधन एवं उपकरण आदि का ध्यान रखना चाहिए।
5. पूरी पाठ्य-सामग्री एवं क्रियाओं को इस प्रकार की इकाइयों में संगठित करना चाहिए, जिनका एक-दूसरे से तार्किक सम्बन्ध हो।
6. इकाई बच्चों की भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं पर आधारित होनी चाहिए।

इकाई योजना की सीमाएँ :

1. लेखक का परिचय उसके द्वारा रचित पाठ की समाप्ति पर दिया जाता है, तभी उसकी भाषा-शैली एवं व्यक्तित्व का विश्लेषण कर सकना सम्भव एवं उचित प्रतीत होता है।
2. सुनने और समझने में आदर्श पठन एवं अनुकरण पठन की क्रियाएँ आती हैं।
3. गद्य-शिक्षण के लिए 70 घण्टे दिये जायेंगे।
4. गद्य के पाठों में लिखित कार्य का क्षेत्र शब्दार्थ एवं भाव स्पष्टीकरण के लिए आवश्यक सूत्रों को लिखने तक सीमित होता है, अन्य सब लिखित कार्य बच्चे घर से करके लाते हैं।
5. पढ़ने और समझने में अनुकरण पठन एवं मौन पठन की क्रियाएँ आती हैं।

इकाई-16

प्रश्न 1.सम्पूर्ण ज्ञान को इकाई मानकर जो योजना बनाई जाती है, वह कहलाती है—

(अ) समवाय योजना (ब) सहसम्बन्ध योजना

(स) इकाई योजना (द) हरबर्ट की पंचपदी (स)

प्रश्न 2. पाठ-योजना के पाँच सोपान के प्रवर्तक है—

(अ) हरबर्ट (ब) स्पेन्सर

(स) जॉन ड्यूवी (द) किल पैट्रिक (अ)

प्रश्न 3. उपयोजन पाठ का तात्पर्य है—

(अ) योजना निर्माण करना (ब) बालकों से कोई योजना बनवाना

(स) सीखे हुए ज्ञान का उपयोग करना (द) उपर्युक्त सभो (स)

प्रश्न 1. अविभक्त इकाई शिक्षण व्यवस्था से आप क्या समझते हैं ? अविभक्त इकाई योजना के स्वरूप और उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– अविभक्त इकाई शिक्षण का अर्थ :

कोठारी कमीशन (1964-66) ने अपने प्रतिवेदन में अपव्यय और अवरोधन की समस्या के हल के लिए अविभक्त इकाई शिक्षण व्यवस्था का उल्लेख किया है। उसका मत है कि ''पहली कक्षा के अन्त में ली जाने वाली परीक्षा को हटा देना चाहिए और पहली दो कक्षाओं को और यदि सम्भव हो सके तो पहली 3 या 4 कक्षाओं की गणना एक शैक्षिक इकाई के रूप में की जानी चाहिए। इस शैक्षिक इकाई में छात्र अपनी योग्यता के अनुसार प्रगति कर सकता है।''**अविभक्त इकाई शिक्षण व्यवस्था की विशेषताएँ :**

1. वर्ष के अन्त में परीक्षाओं का लोप।
2. कक्षा नाम की कोई वस्तु नहीं, किन्तु कक्षा 1-2 को एक इकाई के रूप में माना जाना।
3. मेधावी छात्र के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम को जल्दी पूरा करने की छूट।
4. कक्षा 1-2 का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का उपयुक्त इकाइयों में विभाजन एवं उसी के अनुसार व्यक्तिगत छात्रों को उसे ही पूरा करने का अवसर दना।
5. **अध्यापक का कार्य**—कार्य की योजना बनाना, शैक्षिक इकाइयाँ तैयार करना, शैक्षिक उपकरण तैयार करना, बालकों को कार्य देना।
6. व्यक्ति अथवा समूह की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण विधियों का समायोजन।

अविभक्त इकाई शिक्षण-व्यवस्था में शिक्षण-प्रक्रिया का स्वरूप : शिक्षण इकाइयाँ व्यक्तिगत छात्रों की आवश्यकताओं के अनुकूल होंगी। छात्र एक इकाई कोपूरा कर दूसरी इकाई स्वयं ले सकेंगे। मेधावी छात्र धीमी गति से सीखने वाले छात्रों की सहायता करेंगे। शिक्षण कार्य प्राय: तीन प्रकार से संचालित होगा—

1. पूर्ण इकाई—सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन के प्रकरणों को पूर्ण इकाई के रूप में पढ़ाया जायेगा।

2. जोड़ियाँ बनाना—एक उच्च श्रेणी का बालक एक निम्न श्रेणी के बालक के साथ जोड़ी बनाकर अध्ययन करेगा। वह दिये गये कार्य को पूरा करायेगा और अपने साथी की प्रगति के लिए उत्तरदायी होगा।

3. कार्य के अनुसार समूहों का निर्माण—उद्यान कर्म, खेती आदि कार्यों के अनुसार समूह बनाये जायेंगे।

अविभक्त इकाई शिक्षण व्यवस्था के उद्देश्य :

1. अपव्यय और अवरोधन को रोकना।
2. व्यक्ति को शिक्षित करना न कि पूरे समूह को।3. शिक्षण का नमनीय कार्यक्रम बनाना।
4. शिक्षण विधियों और शैक्षिक इकाइयों को व्यक्तिगत छात्र की आवश्यकताओं के अनुकूल समायोजित करना।
5. प्रत्येक छात्र को अवसर देना कि वह अपनी गति के अनुसार कार्य कर सके।

प्रश्न 2. 'वार्षिक योजना' बनाना क्यों आवश्यक है ? किसी कक्षा में हिन्दी विषय शिक्षण हेतु वार्षिक योजना बनाते समय आप किन बातों का ध्यान रखेंगे ?

उत्तर– कोई भी कार्य तभी सफल होता है, जब उसको योजना बनाकर सम्पादित किया जाता है। शिक्षण कार्य भी बिना योजना के नहीं चलता। जब तक अध्यापक पूरे वर्ष की योजना नहीं बना लेता और यह निश्चित नहीं कर लेता कि उसको वर्ष के किस सत्र में क्या करना है, कौन-कौनसे कार्य सत्रानुसार पूरे करने हैं तब तक उसके शिक्षण कार्य का सफलतापूर्वक निर्वाह नहीं होता। वार्षिक योजना अध्यापक को समय-समय पर बताती रहती है कि उसे अब क्या और करना शेष रह गया है। यह योजना जितनी पूर्ण होगी, जितने अधिक चिन्तन से बनायी होगी उतनी ही अधिक सफलता शिक्षण को मिलेगी।

वार्षिक योजना बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें :

1. वार्षिक योजना विस्तृत और व्यापक होनी चाहिए।
2. जब आवश्यकता हो, तब उसमें परिवर्तन सम्भव होना चाहिए।
3. योजना विद्यालय में उपलब्ध साधनों को ध्यान में रखकर बनानी चाहिए।
4. इस योजना मं छात्रों के मानसिक स्तर का ध्यान रखना चाहिए।
5. छात्रों की वैयक्तिक विभिन्नताओं का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
6. योजना वास्तविक और व्यावहारिक होनी चाहिए।

7. साथी अध्यापकों के सहयोग और परामर्श से वार्षिक योजना बनायी जाये।

8. विभागीय नियमों का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाये।

प्रश्न 3.इकाई पाठ-योजना एवं दैनिक पाठ-योजना में अन्तर बताइये।

उत्तर– इकाई पाठ-योजन

1. इकाई पाठ-योजना को एक दिन में पढ़ाना सम्भव नहीं है और यदि पढ़ाया भी जाता है तो छात्रों की ग्रहण शक्ति एवं क्षमता से बाहर होगा।

2. इकाई योजना का क्षेत्र विस्तृत होता है जिसमें प्रकरण विशेष के विचारों की एकता का संगठन होता है।
3. इकाई पाठ-योजना किसी विषय के एक प्रकरण का पूर्ण रूप होती है।
4. इकाई योजना का आधार किसी विषय का एक पूर्ण प्रकरण या पाठ होता है।
5. इकाई योजना दीर्घावधि शिक्षण की योजना है।

6. इकाई योजना के अन्तर्गत पूर्ण पाठ को एक-साथ पढ़ाया जाये तो अध्यापक छात्रों का मूल्याँकन उचित रूप में नहीं कर पायेंगे।

7.इकाई योजना किसी पाठ को पढ़ाने के शिक्षण उद्देश्यों अर्थात् वाँछित व्यवहारगत परिवर्तनों, शिक्षण अधिगम स्थितियों तथा मूल्याँकन विधियों का समन्वित रूप व्यक्त करती हैं।

दैनिक पाठ-योजना

1. काई को दैनिक पाठ-योजनाओं में विभाजित करके पढ़ाया जाये तो एक शिक्षक इसे आत्मविश्वास के साथ पढ़ा सकेगा तथा छात्रों के भी स्पष्टता से समझ में आयेगा।
2. दैनिक पाठ-योजना का क्षेत्र सीमित होता है जो प्राय: एक दिन या कालांश की शिक्षण योजना होती है।
3. दैनिक पाठ-योजना इकाई योजना का अंश या अभिन्न अंग होती है।
4. दैनिक पाठ-योजना का आधार इकाई योजना है।
5. दैनिक पाठ-योजना अल्पावधि शिक्षण योजना है।
6. एक पाठ को दैनिक इकाइयों में विभाजित करके पढ़ाया जाये तो अध्यापक बच्चों का मूल्याँकन उचित रूप में कर सकता है।
7. दैनिक पाठ योजना इनका अंश-रूपों में (खण्डों में) अभिव्यक्त करती हैं।

इकाई-17

प्रश्न 1.हिन्दी में मूल्यांकन का प्रयोजन है—

(अ) भाषा में सुधार लाना (ब) अगली कक्षा में क्रमोन्नत करना

(स) विषय ज्ञान की जाँच करना (द) भाषा के प्रति रुचि जागृत करना (स)

प्रश्न 2. मूल्यांकन प्रक्रिया को त्रिकोणात्मक रूप से किसके द्वारा प्रदर्शित किया गया था ?

(अ) रेमाण्ट (ब) टी. पी. नन

(स) पेस्टालॉजी (द) डॉ. ब्लूम (द)

प्रश्न 3. रचना कौशल का मूल्यांकन किस प्रकार के प्रश्नों से होता है ?

(अ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से (ब) अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों से

(स) लघूत्तरात्मक प्रश्नों से (द) निबन्धात्मक प्रश्नों से (द)

प्रश्न 1. मूल्याँकन से आपका क्या अभिप्राय है ? मूल्याँकन के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन करिये।

उत्तर– मूल्याँकन का अर्थ—परीक्षा के उद्देश्यपूर्ण रूप से समझने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, उसे मूल्याँकन कहते हैं। मूल्याँकन का उद्देश्य परीक्षा में सुधार करने के साथ-साथ शिक्षण विधियों में भी सुधार करना है। यह स्तर शारीरिक, मानसिक अथवा आत्मिक हो सकता है। शिक्षा द्वारा बालकों को अनुभव प्राप्त होते हैं और उन अनुभवों के आधार पर वे अपने व्यवहार को बदलते, सुधारते, परिवर्तित व संशोधित करते हैं। ये व्यवहार परिवर्तन इस बात के सूचक है कि अमुक व्यक्ति ने कितनी शिक्षा पाई है।

मूल्याँकन हमें बालकों की प्रगति की जाँच ही नहीं कराता बल्कि इसका संकेत भी देता है कि बालकों को पर्याप्त अनुभव दिए गए हैं अथवा नहीं।

मूल्याँकन वह पद्धति है, जिसके माध्यम से हम पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। मूल्याँकन सीखने की परिस्थितियों की जाँच करता है। मूल्याँकन शिक्षा के विविध पक्षों और छात्र के व्यक्तित्व के विविध पक्षों के परिवर्तनों का पता लगाता है।

मूल्याँकन के उद्देश्य :

1. विद्यार्थियों के कार्यों की परीक्षा लेना।
2. विद्यार्थियों की कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त करना।3. नवीन पाठ्यक्रमों की रचना करना।
4. प्रचलित परीक्षा प्रणाली में सुधार करना।
5. व्यक्तिगत रूप से छात्रों को निर्देश देना।
6. उपचारात्मक एवं निदानात्मक शिक्षा की योजना बनाना।
7. विद्यार्थियों के कार्यों के पुनर्गठन तथा उसे दोहराने का प्रबन्ध करना।

8. शैक्षिक कार्यों की प्रेरणा प्रदान करना।
9. कौशल एवं शैक्षिक उपलब्धि का आकलन करना।
10. विद्यार्थियों का शारीरिक एवं सामाजिक विकास करना।

प्रश्न 2. भाषायी मूल्याँकन में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के पक्ष अथवा विपक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर– 1. वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्रश्न व्यापक क्षेत्र से लिये जाते हैं। इसलिए इसमें व्यापकत्व का गुण होता है। पाठ्यवस्तु का कोई अंश अछूता नहीं छोड़ा जाता।

2. इसके उत्तरों की जाँच करने में किसी प्रकार का पक्षपात काम नहीं करता, क्योंकि वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर एक ही होत हैं।

3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का उत्तर देने में छात्रों को अधिक समय नहीं लगता।

4. वस्तुनिष्ठ परीक्षा देने के लिए अधिक रटना पड़ता है। अतः परीक्षा के दिनों में छात्र की मनःस्थिति ठीक रहती है।

5. वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं से छात्रों की अनेक योग्यताओं का आसानी से मापन हो जाता है।

6. ये परीक्षाएँ विश्वसनीय और वैध होती हैं।

इकाई-18

प्रश्न 1.नैदानिक परीक्षण का मुख्य उद्देश्य है—

(अ) छात्र की कमजोरियों का पता लगाना

(ब) छात्र की अभिव्यक्ति का सुधार करना

(स) छात्र में सद्वृत्तियों का विकास करना

(द) छात्र की भाषा सम्बन्धी क्षमता का मूल्यांकन करना (अ)

प्रश्न 2. उपचारात्मक शिक्षण प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए—

(अ) यह प्रक्रिया सतत चलती रहनी चाहिए

(ब) जब तक विद्यालय में समय न मिले

(स) जब तक बालकों की कमजोरी दूर न हो

(द) जब तक अध्यापक जारी रखना चाहे (स)

प्रश्न 1. ''शुद्ध वाचन एवं शुद्ध श्रवण की सम्यक् आश्रितता भाषायी शिक्षण का आधार है।'' ध्वनि श्रवण किसे कहते हैं ? उच्चारण दोषों के कारणों को लिखिए। विद्यालय में शुद्धोच्चारण का अभ्यास किस प्रकार करेंगे ?

उत्तर– ध्वनि-श्रवण—फेफड़ों से निकली हुई वायु ध्वनि-यन्त्र के अंगों के आन्दोलन के कारण आन्दोलित होकर निकलती है और बाहर की वायु में अपने आन्दोलन के अनुसार एक विशिष्ट प्रकार के कम्पन से लहरें पैदा कर देती हैं। वे लहरें ही सुनने वाले के कान तक पहुँचती हैं और वहाँ श्रवणेन्द्रिय में कम्पन पैदा कर देती हैं। इस कम्पन का प्रभाव मध्यवर्ती कर्ण की अस्थियों द्वारा भीतरी कर्ण के द्रव्य पदार्थ पर पड़ता है और उसमें भी लहरें उठती हैं जिसको सूचना श्रावणी शिरा के तन्तुओं द्वारा मस्तिष्क में जाती है और हम सुन लेते हैं।

उच्चारण-दोष के कारण :

1. शीघ्र प्रयत्न—व्यक्ति का यह स्वभाव है कि वह किसी काम को बहुत जल्दी करना चाहता है। शब्दोच्चारण में भी यही बात पाई जाती है। फलस्वरूप शब्द का पूर्ण उच्चारणनहीं हो पाता; यथा—विजय = विजे।

2. प्रयत्न-लाघव—जिस प्रकार व्यक्ति किसी काम को बहुत जल्दी रना चाहता है, उसी प्रकार वह कम श्रम करना चाहता है। फलस्वरूप उच्चारण पूर्ण नहीं हो पाता, जैसे—मास्टर साहब= मास्साब, मास्टर जी = मास्सी आदि।

3. आदत—आदत के कारण भी उच्चारण में विकार आ जाता है। कोई व्यक्ति रुक-रुक कर बोलता, कोई शीघ्रता से बोलता है।

4. शुद्धोच्चारण का ज्ञान न होना—बहुत से व्यक्तियों को इस बात का पता नहीं होता कि शब्द शुद्धोच्चारण क्या है। इसलिए वे 'प्रश्न' को 'प्रशन', 'छिपना' को 'छुपना', 'प्रताप' को 'परताव' कह जाते हैं।

पाठशाला में शुद्धोच्चारण का अभ्यास–पाठशाला में शुद्धोच्चारण का अभ्यास करते समय अध्यापकगण इस बात का विसेष ध्यान रखें कि शब्दों के शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ, स्वरों और वर्णों की शुद्धता पर भी ध्यान रखा जाये।

याज्ञवल्क्य शिक्षा के अनुसार शुद्धोच्चारण की निम्नलिखित 6 विशेषताएँ बताई गई है—

(1) मिठास, (2) अक्षरों की अस्पष्टता,

(3) पदों का पृथक्-पृथक् उच्चारण, (4) सुन्दर स्वर,

(5) धैर्य, (6) लय-समर्थता।

उच्चारण सम्बन्धी निम्नलिखित दोषों से विद्यार्थियों को बचना चाहिए—

1. गाना
2. जल्दी-जल्दी उच्चारण करना।
3. सिर हिलाते हुए वाचन करना।
4. मौन रूप में उच्चारण करना।
5. दबे स्वर में पढ़ना।

विद्यार्थियों का उच्चारण शुद्ध करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाये जा सकते हैं—

(क) शुद्ध बोलने का अभ्यास कराना।

(ख) शुद्ध बोलने वालों का साहचर्य।

बालकों में अनुकरण की प्रवृत्ति तीव्र रूप में पाई जाती है, इसलिए समय-समय पर उनका सम्पर्क अच्छे वक्ताओं से कराना चाहिए, ताकि वे स्वाभाविक रूप से शुद्ध उच्चारण को ग्रहण कर सकें।

इकाई-19

प्रश्न 1.प्रतिभावान बालकों के लिए किस प्रकार की भाषा शिक्षण व्यवस्था होनी चाहिए ?

(अ) सामान्य व्यवस्था (ब) विशिष्ट व्यवस्था

(स) कठिन व्यवस्था (द) भाषा का उन्नत पाठ्यक्रम (द)

प्रश्न 2. सामान्य बालकों की बुद्धिलब्धि होती है—

(अ) 90 से 130 तक (ब) 100 से 130 तक

(स) 80 से 120 तक (द) 130 से अधिक (अ)

प्रश्न 1. मंद बुद्धि बालकों की पहचान के लक्षण लिखिए।

उत्तर– मंद बुद्धि बालकों की पहचान इस प्रकार की जा सकती है–

(1) मंद बुद्धि बालकों का बातचीत करने का ढंग और दैनिक व्यवहार सामान्य स्तर से गिरा हुआ स्पष्ट प्रतीत होती है।

(2) इनकी बुद्धि लब्धि 90 या उससे कम होती है।

(3) इनकी याददाश्त कमजोर होती है।

(4) प्रश्नों के उत्तर देने और कोई काम करने में वे क्रमता को निभा नहीं पाते।

(5) इनकी अवधान शक्ति क्षीण और अवबोध ग्रहण एवं विचार करने की शक्ति बड़ी कमजोर होती है।

(6) इनकी मानसिक शक्ति दुर्बल होती है।